॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द सरस्वती

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

नवम्बर, 2015 वर्ष 18, अंक 11
विक्रमी सम्वत् 2072
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
कुल पृष्ठ 20

सांस्कृतिक आलोक का प्रतीक दीपावली पर्व

❐ स्व. अशोक कौशिक

भारत का प्रत्येक प्राणी जन्मना ही 'भद्रकाम' है। हम नित्य-प्रति परमात्मा से प्रार्थना करते हैं-'दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव'। अर्थात् प्रभो! हमारे दुरितों को दूर करो ओर जो हमारे लिए भद्र है, मंगलमय है, कल्याणकारी है, उसको हममें समाहित कर दो। प्रख्यात पुरुषार्थ चतुष्टय-'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' में भी मोक्ष को मुक्ति नहीं, छुटकारा नहीं, अपितु परमपद की प्राप्ति माना है। प्राणी की देह नश्वर है, आत्मा नहीं। आत्मा अजर है, अमर है। हमारा यह भद्रकामी देश और इसके देशवासी इसी पुरुषार्थ चतुष्टय की साधना के लिए नित्य प्रति पर्व एवं उत्सव का आयोजन करते हैं। वर्ष के 365 दिनों में वह कौन सा दिन है कि जिस दिन कोई पर्व न हो। पर्व, उत्सव और त्यौहार हमें जीवन्तता प्रदान करते हुए हममें परस्पर स्नेह, सौहार्द और सद्भावना का संचार करते हैं।

पर्वो की इस अटूट श्रृंखला में मुकुट-मणि का स्थान कदाचित् दीपावलि को प्राप्त है। दीपावली मात्र एक पर्व अथवा त्यौहार नहीं अपितु पर्व पुंज है। कार्तिक कृष्णा एकादशी अर्थात् रमा एकादशी से प्रारम्भ कर गोवत्स द्वादशी, धन्वन्तरि त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी एवं हनुमान जयन्ती, कमला जयन्ती एवं दीपावली, अन्नकूट गोवर्धन विश्वकर्मा प्रतिपदा और भ्रातृ अथवा यम द्वितीया तक, पूरे सात दिन तक, यत्र, तत्र, सर्वत्र दीपमालिका का प्रकाश दृष्टिगोचर होता है। यह श्रेष्ठ पर्वपुज भारतीय संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रसंग है। जिसमें आनन्द और प्रकाश की शाश्वत विजय का बड़ा मार्मिक इतिहास जगमगा रहा है।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर चलने की प्रेरणा देने वाले इस पर्व में हमारी समस्त गतिमान संस्कृति का जाज्वल्यमान इतिहास प्रतिबिम्बित होता है। प्रतिवर्ष दीपमालिका के रूप में हम अपने इसी इतिहास और परम्परा की पुनरावृत्ति करते हैं।

यह पर्व एक ओर जहाँ हमारे व्यापक जीवन-दर्शन का ज्ञानोज्वल प्रतीक है, वहीं यह उस रम्यलोक-कल्पना की भी अभिव्यक्ति है, कि जिसके अनुसार लक्ष्मी कार्तिक मास की अमावस्या को विष्णु की वैभवशाली शय्या को त्याग कर खेतों की हरी-भरी पगडंडियों पर, गांवों की संकरी गलियों में भ्रमण करती हुई प्रत्येक किसान की कुटिया के द्वार पर जाकर आश्रय खोजती है। राज-लक्ष्मी के पूजन की अपेक्षा इसे हम सदैव जन-लक्ष्मी का ज्योति पर्व के रूप में मनाते आए हैं। लक्ष्मी समग्र रूप से पुरुषार्थ चतुष्टय की अधिष्ठात्री देवी है। उसकी अर्चना उपासना समाज के सभी अंगो के लिए अभ्युदय एवं निःश्रेयस् का परम साधन मानी गई है।

संसार में तेज को ही सार माना गया है। तेज ही 'श्री' का मुख्य स्वरूप है। तेज विहीन होने पर स्वयं मनुष्य हत-श्री कहलाता है। प्रभु ने हमें तीन तेज प्रदान किये हैं-सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कार्तिक मास में सूर्य के तुला राशि में स्थित होने के कारण वह निस्तेज हो जाता है और अमावस्या के दिन चन्द्रमा के तेज का सर्वथा अभाव हो जाता है। तब एकमात्र तृतीय तेज, अर्थात् अग्नि ही इस समय उपलब्ध रहता है। इस वैज्ञानिक तत्त्व के आधार पर दीपावली के दिन लक्ष्मी की उपासना में अग्नि की प्रमुखता मानी गई है।

कार्तिक अमावस्या के दिन ही धर्मराज यम ने जिज्ञासु नचिकेता को ज्ञान की अन्तिम वल्ली का उपदेश किया था। सावित्री को पुत्रवती होने का वरदान भी यम ने कार्तिक अमावस्या के दिन ही प्रदान किया था। इसी प्रकार यमरूपी अन्धकार के भीतर ब्रह्म-ज्ञान और अनन्त सौभाग्य के दो-दो पुण्य प्रसंगो का उद्गम हुआ। दीपोत्सव के साथ धर्मराज यम का यही सम्बन्ध है। जिसके अन्तराल में भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा जगमगा रही है। मृत्यु स्रोत से अमरत्व एवं पुण्य जीवन का उद्रेक भारतीय संस्कृति का प्राण है। **'मृत्योर्मा अमृतं गमय।'**

दीपोज्वलन के साथ ही यह दीप निर्वाण का भी पर्व है। ऐसा पुण्य पर्व, जो क्षण-भंगुर जीवन की अस्थिर दीप शिखायें बुझा कर भी महाकाश में ऐसी पुंजीभूत ज्योतियां विकीर्ण कर गया जिनसे मानवता जीवन प्राप्त कर सकी।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

दीपावली की शुभकामनाएं

आपके मन-आँगन को आलोकित करे यह शांतिदायक ज्योतियाँ,
समृद्धि के प्रकाश से और अनंत सुखों की बौछार से।
यह पर्व स्मृतियों की दीप्ति छोड़ जाए।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महात्मा आनंद स्वामी जी के जन्मोत्सव के तत्वावधान में
आनन्द पर्व आयोजित
मुस्कुराते रहना ही ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है- डॉ. पूनम सूरी

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'आनन्द पर्व' जो कि महात्मा आनन्द स्वामी के जन्मोत्सव के रूप में 16 व 17 अक्टूबर को डीएवी पब्लिक स्कूल, कोटा में मनाया गया । इस अवसर पर आज दिनॉक 17 अक्टूबर 2015 को प्रातः 9 बजे से 151 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इससे एक दिन पूर्व दिनॉक 16 अक्टूबर 2015 को डा. वागीश कुमार शर्मा जी के 'आओ चले सेवा से आनन्द की ओर' विषय पर प्रवचन हुए जिसमें बड़ी संख्या में आर्य समाजी व शहर के गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। जिसमें प्रतिभाशाली विद्यार्थियों तथा शहर के सेवा-भावी आर्यसमाजियों को अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया।

मंच से विशेष स्मारिका का लोकार्पण करते सभा प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी, साध्वी उत्तमायति, श्री.एस.के. शर्मा सभा मन्त्री, डा. वी. सिंह डायरेक्टर पब्लिक स्कूल्स डी.ए.वी.

इस यज्ञ महोत्सव का शुभारम्भ पाणिनी महाविद्यालय, बनारस से पधारी हुई विदुषी डा. प्रीति विमर्शनी व महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणीयों के ब्रह्मत्व में किया गया। इस भव्य और श्रेष्ठ आयोजन के मुख्य अतिथि थे श्री पूनम सूरी जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता साध्वी उतमा यति जी ने की।

अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि महोदय श्री पूनम सूरी जी ने कहा कि हमें महात्मा आनन्द स्वामी के जीवन से त्याग व समर्पण की सीख लेनी चाहिए तथा जीवन में सदैव मुस्कुराते रहना ही ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है। उन्होंने वर्तमान में तथा-कथित धर्म गुरूओं पर चुटकी लेते हुए आर्य समाज के महत्व को स्पष्ट किया तथा सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति के लिये आर्य समाज को अहम बताया, तथा ऋषि परम्परा को जीवन में अपनाने की बात कही। सर्वप्रथम प्रधान जी ने मंच पर आर्यसमाज के संन्यासियों व विद्वानों का सम्मान कर आर्य परम्परा का निर्वहन किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रहे डा. वी. सिंह, निदेशक, डीएवी प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में शहर के आर्य समाज के पदाधिकारी व सदस्य तथा गणमान्य अतिथि एवं अभिभावक उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में श्री अरविन्द पाण्डेय, श्री श्रीचन्द गुप्ता, श्री नरदेव आर्य, श्री रामप्रसाद याज्ञिक, श्री चन्द्रमोहन कुशवाहा एवं अन्य आर्यसमाज पदाधिकारियों ने भी राजस्थानी चूनड़ी का साफा, मोतियो की माला, दुशाला व ओ३म का सुसज्जित स्मृति चिन्ह भेट कर प्रधान श्री पूनम सूरी जी का सम्मान किया। इस अवसर पर श्रीमती मणिसूरी जी का भी कोटा महिला आर्यसमाज की प्रतिनिधियों ने भी मोतियों की माला पहनाकर हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा के प्रधान श्री अशोक कुमार शर्मा जी के स्वागत भाषण से हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सह-मंत्री श्री सत्यपाल जी ने महात्मा आनन्द स्वामी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्रीमान् एस.के.शर्मा, जी महामंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने भी अपने सम्बोधन में कार्यक्रम के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि डीएवी ऐसी संस्था है जो वर्तमान में छात्रों को बड़े ही नवीनतम ज्ञान व वैदिक ज्ञान का अद्भुत समन्वय कर रही है।

श्री अजय ठाकुर द्वारा लिखित तथा श्री एम.एल. गोयल द्वारा निर्देशित नृत्यनाटिका श्रेय मार्ग के पथिक 'आनन्द स्वामी' ने सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया। इस नृत्यनाटिका में जब 'उठ जाग मुसाफिर' गीत पर प्रभात फेरी निकली तो गणमान्य अतिथियों के साथ मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी बड़े उत्साह से उसमें सम्मिलित हो गये। मंच पर महात्मा आनन्द स्वामी जी के संन्यास दृश्य **(शेष पृष्ठ 19 पर)**

संयुक्त परिवार की बाँसुरी

बाँसुरी की लोकप्रियता सर्वाधिक प्रचलित है। बालक से वृद्ध, सभी के सुर बाँसुरी से गुजरकर एक समान मधुर ध्वनित होते हैं। इसी कारण संयुक्त परिवार को बाँसुरी से उपमित किया गया। बेमेल स्वरों का मेलजोल कर समरसता की मधुर ध्वनि में ढालने की बेजोड़ विशेषता बाँसुरी की सर्वप्रियता का द्योतक है। अगर बाँसुरी अपने मधुर सुरों को खो दे तो वह मात्र बाँस की छड़ी है। इसी भाँति संयुक्त परिवार की बाँसुरी से भी स्नेह के स्वर खो जाएं तो जीवन रसहीन बन जाता है।

अत: जीवन को रसीला और रोचक बनाने हेतु मन के दिष्टीकांण को बदलना होगा। रिश्ते वे ही अच्छे लगते हैं, जिससे प्रेम रहे लेकिन जहाँ संवेदनाएँ पिसती हों, और एक दूसरे को देख कर परेशानी महसूस होती हों तो वे रिश्ते, रिश्ते नहीं रिसते घाव बन जाते हैं। अगर परिवार रूपी लोहा स्नेह की लकड़ी से जुड़ जाए तो विषमता, विसंगति और विषाद के समुन्दर में डूबने से बच जाता है।

संयुक्त परिवार की विशेषता ऐसी है, जहाँ सुख का ग्राफ लगातार बढ़ता है और दु:ख का ग्राफ निरन्तर घटता जाता है। सुख और दु:ख की खासियत यह है, सुख बाँटने से बढ़ता है और दु:ख बाँटने से घटता है। यही कारण है, संयुक्त परिवार में एक का सुख सभी का सुख बन जाता है और एक का दु:ख सबका दु:ख बन जाता है। यह सर्वविदित है, जिस परिवार में अपनी चाह को प्रधानता दी जाती है, बुद्धि के खेल खेले जाते हैं उस परिवार से प्रसन्नता, शान्ति, आनन्द और ताजगी की बयार ऐसे विदा हो जाती है जैसे नन्हें कोमल बीज को गरम पानी से सींचने पर उसकी विकसित होने की क्षमता खत्म हो जाती है।

आज के आधुनिक परिवेश में प्राय: लोग संयुक्त परिवार में रहने से कतराते हैं। उनका मानना है, संयुक्त परिवार में सबके साथ मेलजोल बिठाने में अनेक असुविधाएँ झेलनी पड़ती हैं, बेइन्साफी सहनी पड़ती है और कई बार तिरस्कार एवं निरादर का भी सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं संयुक्त परिवार के बुजुर्ग पुरातन ख्यालों के होने से अनुशासन के आग्रही होते हैं। इसके अलावा सभी सदस्यों की अपेक्षा पूर्ति एवं अनुकूलता पर गौर करना पड़ता है। ऐसी हालत में शब्दों का रूखापन एवं व्यवहार का ओछापन जिन्दादिली को मुरझा देता है। यूँ भी संयुक्त परिवारों की मर्यादा इतनी कड़ी होती है कि अपनी मनमर्जी पर पाबन्दी रखनी पड़ती है।

माना कि संयुक्त परिवार में आत्म नियंत्रण के साथ दायित्व बोध रखना अनिवार्य है। इस कारण असुविधाएं भी अधिक झेलनी पड़ती हैं तथापि संयुक्त परिवारों में सुशीलता और भलमनसाहत के संग सदाचार की मूल पूँजी को सुरक्षित रखना आसान है। साथ ही व्यवहार शुद्धता एवं आचरण शुचिता की सलामती शत-प्रतिशत बनी रहती है। फलत: सुख एवं सौम्यता के मेल से शान्ति का ग्राफ बढ़ता जाता है।

स्मरण रहे, संयुक्त परिवारों की व्यवस्था तथा नियमबद्धता का पालन अगर कोई व्यक्ति शर्म या लिहाज से भी कर रहा हो तब भी वह धन्यवाद का पात्र है। संयुक्त परिवार का अनुशासन एवं नियंत्रण अन्दरूनी मौलिकता और नैतिकता को सुरक्षित रखने में मददगार बनता है। ऋषियों ने कहा है कि लज्जा के कारण ही सही जो अपने जीवन में संयम और सदाचार का पालन करता है, वह सचमुच धन्य है, कृतार्थ है।

एक बार मनोवैज्ञानिक डाक्टर से किसी ने पूछा, ''आपके पास मानसिक समस्या लेकर आने वालों में विभक्त परिवार की संख्या अधिक है या संयुक्त परिवार की?'' डॉक्टर ने अपने अनुभव के आधार प कहा, ''संयुक्त परिवार की अपेक्षा विभक्त परिवार के लोगों का रेशो अधिक है।''

स्पष्ट है, विभक्त परिवारों की मानसिक सुरक्षा अधिक खतरे में है। हालांकि आज जीवन की आपाधापी, स्वच्छन्दता, भौतिकता की चकाचौंध, तुच्छ स्वार्थो की अंधी दौड़ मैं व मेरापन ने संयुक्त परिवारों को बिखेर दिया है।

गौर करें, संयुक्त परिवार हाथ की पाँच ऊँगलियों के समान है। हाथ की पाँचों ऊगलियों में विषमता अवश्य दिखाई देती है किन्तु उनमें विरोध नहीं है। वे एक समान नहीं है किन्तु उनका रूख हमेशा एक तरफ रहता है। इन ऊँगलियों की विशेषता यह है कि वे एक दूसरे की मददगार होने से उनमें कभी संघर्ष नहीं होता।

जरा सोचो, थाली में रखे हुए भोजन को हाथ की पाँच ऊँगलियाँ मिल कर उठा लें किन्तु मुँह को न दे तो क्या होगा? मुख में रखे भोजन को अगर मुख अपने पास ही रखे और पेट को न दें तो क्या होगा?

आज तक ऊँगलियों ने और पेट ने ऐसा कभी नहीं किया क्योंकि शरीर का समस्त सिस्टम एक दूजे के प्रति बहुत उदार हैं। उनकी इस उदात्तता का कारण स्पष्ट है कि उन्हें एक दूसरे से प्रेम है। जब पैर में कांटा चुभता है तो आँखें आँसू बहाने लगती हैं। मन झटपट हाथों को आदेश देता है और हाथ तुरन्त काँटा निकाल देते हैं।

ठीक यही रवैया संयुक्त परिवार में अपनाया जाता है। वे अपना सुख और दु:ख अपने तक सीमित न रख कर सबमें बाँट देते हैं। जो एक सदस्य को मिलता है वह दूसरे तक अवश्य पहुँचाता है। इसी कारण पीड़ा चाहे किसी एक की होती है मगर उसे कम करने के लिए सभी सदस्य तत्परता से जुट जाते हैं। ध्यान रहे, स्वर्ग का स्थान मरने के बाद देखा जा सकता है कि नहीं कौन जाने किन्तु स्वर्ग का अनुभव संयुक्त परिवार में किया जा सकता है।

संयुक्त परिवार में प्राय: 'घर सुखिया' की अनुभूति है तो विभक्त परिवार में 'बाहर सुखिया पर घर दुखिया' का एहसास होता है।

आज यह प्रश्न होना स्वाभाविक है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य की जीवन शैली में क्या संयुक्त परिवार में राजीखुशी से जिया जा सकता है? चाहे परिवार का मुखिया कितना ही उदात्त ह्रदय वाला क्यों न हो फिर भी ईर्ष्या, स्पर्धा और मनमुटाव का वातावरण निर्मित हुये बिना नहीं रहता।

ऐसा नहीं होता कि संयुक्त परिवार में समस्या आती न हो किन्तु समस्या टिकती नहीं, यह सत्य है। मानव मन ऐसा तरल पदार्थ नहीं है जो सामने वाले की पसन्द के साँचे में ढल जाए। सबकी अपनी पसन्द है, सभी स्वतन्त्र हैं। इसलिए सबकी प्रसन्नता व नाराजगी का ख्याल रखने के बावजूद भी गलतियाँ, भूलें और अपराध होना स्वाभाविक है।

अगर कुसूरवार व्यक्ति को सजा देने में लग जाओगे तो इस दुनिया में एक दूसरे को सजा देने का यह अन्तहीन सिलसिला कभी भी समाप्त नहीं होगा। यद्यपि संयुक्त परिवार में चाहे-अनचाहे, गाहे-बगाहे एक दूजे के प्रति नाइंसाफी भी हो सकती है। तथापि एक बात विचारणीय है, जैसे अयोध्या में एक मंथरा हो सकती है तो लंका में एक विभीषण भी अवश्य होता है।

(शेष पृष्ठ 17 पर)

आर्यन अभिनन्दन समारोह

समारोह को सम्बोधित करते ठाकुर विक्रम सिंह जी एवम् मंचासिन स्वामी प्रणावानन्द जी, स्वामी आर्यवेश, ठाकुर विक्रम सिंह जी एवम् डॉ. रामप्रकाश जी (कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सुमेधा नन्द जी (सांसद सीकर), स्वामी इन्द्रवेश का अभिनन्दन करते ठा. विक्रम सिंह जी

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट द्वारा दिनांक 19 सितम्बर 2015 को गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में ठाकुर विक्रम सिंह के 73वें जन्मदिवस पर सम्पन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने की । आर्य समाज के इतिहास में ऐसा समारोह पहली बार हुआ। ठाकुर साहब का कहना है कि प्रचार व्यक्ति करते है, भवन नहीं। अत: आर्य समाज के संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक आदि सभी का सम्मान होना चाहिए। समारोह में श्री डॉ. रामप्रकाश जी, डा. योगानन्द जी, डा. वेदप्रताप वैदिक, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद, श्री रामनाथ सहगल, स्वामी आर्यवेश आदि ने अपने विचार रखें और आशा की कि आर्य समाज आगे बढ़ेगा।

समारोह में आर्य समाज के गणमान्य संन्यासी स्वामी देवहतानन्द जी, स्वामी आदि 50 संन्यासी एवं वानप्रस्थ का सम्मान उचित राशि, वस्त्र एवं पुस्तक मिष्ठान आदि से किया गया।

महोपदेशक श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, श्री प्रेमपाल शास्त्री, श्री धर्मवीर शास्त्री, मेघश्याम वेदालंकार आदि 50 विद्वानों का सम्मान किया।

लगभग 100 आर्य समाज के भजनोपदेशक, श्री ओमप्रकाश वर्मा, सत्यपाल पथिक, सत्यपाल मधुर, सत्यदेव स्नातक, सत्यपाल सरल, सहदेव वेधढ़क, मामचन्द आदि का यथायोग्य सम्मान किया गया। आर्य महिमा उपदेशक एवं भजनोपदेशिका का भी उचित सम्मान किया जिनमें विशेष उत्तमायति, श्रीमती सन्तोष बाला आर्या, आचार्या लक्ष्मी भारती, सुमेधा आर्य आदि 25 महिलाओं का भी सम्मान किया गया।

ढोलक वादक संगीत सहयोगी अन्य अनेक विद्वान सम्मिलित हुए। करीब 250 लोगों को सम्मानित कर आर्यन परिवार ने अपना सौभाग्य समझा, सभा का संचालन डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने किया। समारोह के बाद करीब लगभग 1000 व्यक्तियों ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया।

ठाकुर विक्रम सिंह जी के आज्ञाकारी पुत्र ठा. प्रज्ञा आर्य, ठा. वरूण वीर, ठा. राहुल आर्य, ठा. इन्द्रवीर, एवम् पौत्र ठा. मनु सिंह

रामायणः संकृति पर संस्कृति की विजय गाथा

❒ स्व. स्वामी सत्यम्

आर्य कौन?: वेदों के अनुसार सृष्टि रचना के बाद मानवों का जन्म हुआ, उस समय मानव जाति में दो ही वर्ग थे-आर्य एवं शूद्र या दस्यु। ''उत शूद्रे उत आर्ये'', ''शूद्रार्या वसृज्येताम्'', ''विजाहीह्यार्यान्ये च दस्यव:''। आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए श्री यास्क मुनि ने कहा-''आर्य: ईश्वर-पुत्र''-आर्य वह है जो ईश्वर का पुत्र है। 'Son of God' अथवा 'Children of God' की परिपाटी का मूल यही आर्य शब्द है। प्रश्न हो सकता है कि उसके पुत्र तो सभी हैं। यहां ''पुत्र' शब्द का सामान्य अर्थ नहीं है, पुत्र का सही अर्थ है- **''पुत्राम नरकं, तस्मात् त्रायते इति पुत्र:''**- जो अपने पिता को अपयश रूपी नरक से बचाए वह पुत्र है। इसी अर्थ में श्री यास्क मुनि ने पुत्र शब्द का प्रयोग किया है। परमात्मा के पुत्र वे हैं जो उसकी आज्ञा में रहकर चलते हुए उसके नाम को यशस्वी बनाएं परमात्मा की आज्ञा का दूसरा नाम है वेद। वेद मानव समाज का संविधान है जो परमात्मा ने मनुष्य मात्र को दिया है। जो इस वेद को अपने आचरण में लाते हैं वे धार्मिक हैं-''आचार: प्रथमोधर्म:'', वेदज्ञ विद्वान हैं-''यस्तु क्रियावान् पुरुषं स विद्वान'', ईश्वर भक्त हैं और परमात्मा के सच्चे पुत्र हैं। इन लोगों का आचार-व्यवहार देखकर अन्य लोगों की परमात्मा के प्रति आस्था और श्रद्धा बढ़ती है। यही है ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र के 'अग्निमीडे' का सत्य अर्थ। परमात्मा का स्तवन शब्दों में नहीं, भक्त के प्रत्येक कार्य और आचरण में प्रतिलक्षित होता है। ऐसा व्यक्ति ही आर्य है। आर्य हमेशा ज्योति को आगे रखकर चलते हैं-''आर्या ज्यातिरग्रा:''। ज्योति ही आर्यो का लक्ष्य होती है, उनका पूरा जीवन ज्योतिर्मय होता है। इसके विपरीत आचरण वाले शूद्र हैं। आर्य बाहर से भारत में नहीं आए, अपितु भारत से बाहर की भूमियों में जाकर बसे। उनमें कुछ थे ''कूर्वाण:'' जिन्होंने अरब में ''नमस्''-नमाज और ''रामध्यान'' रामादान को जन्म दिया। कुछ जो कालान्तरेण तामसिक बन गए थे ''शयान:''। (China) कहलाए, कुछ जप को ही महत्व देते थे वे जपान: कहलाए। जो उनमें शम्रन थे स्वस्ति के उपासक, उन्होंने ''शर्मण्य'' (Germany) की सृष्टि की। महर्षि गौतम के शिष्यों ने अपने आचार्य का नाम प्रसिद्ध करने के लिए ''गौतमालय'' (Gwatemala) की स्थापना की जबकि महर्षि कणाद के शिष्यों ने ''कणादा:'' (Canada) की स्थापना की। इस प्रकार यदि हम सब नामों का विश्लेषण करें तो हमें उनमें से लुप्त सरस्वती की धारा झांकती दिखाई देगी।

संस्कृत शब्दों में एक-एक अक्षर सार्थक है। संस्कृति में से 'स' निकाल दिया जाए तो संकृति बन जाता है जिसका अर्थ है संकर। संस्कृति सात्त्विकता का परिणाम है और संकृति तामसिकाता और अज्ञान का-''संकरोनरकायैव''। आज के युग की अशांति व नानाविध समस्याओं का मूल यही संस्कृति का अभाव तथा संकृति की प्रधानता है। संस्कृति आत्मोन्नति का परिणाम है संस्कृति जिसमें होती है वह आर्य ही होता है। इसलिए आसुरी संस्कृति कहना सर्वथा गलत है। असुरों में संस्कृति नहीं संकृति होती है, इसीलिए गीता ने भी दैवी संपद् और आसुरी संपद् नाम से ही उन्हें पुकारा है। संस्कृति और आर्यत्व दोनों अभिन्न है। संस्कृति का कारण है बुद्धि एवं चित्त विक्षेप। यह चित्तविक्षेप ब्राह्मण में भी हो सकता है। जब कोई शूद्र सत्संग में आकर संस्कृतिमान् बन जाता है वह आर्य बन जाता है, इसके विपरीत जब कोई आर्य संस्कृतिमान् बन जाता है या अनार्य-अनाड़ी-बन जाता है-''शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।'' इस तरह वैदिक मर्यादा के अनुसार आर्य, शूद्र, ब्राह्मण यह सभी जाति नहीं है, अपितु गुण तथा कर्म के आधार पर दिए गए विशेषण हैं। रामायण में श्रीराम का चरित्र एक सच्चे आर्य का चित्र है। उनके एक-एक आचरण में आर्यत्व ओतप्रोत है। धर्मज्ञ, सत्यसंग, प्रजाहितकारी, शीलवान,शांत, दान्त, अनसूय, श्लक्षण, कृतज्ञ, विजितेन्द्रिय, मृदु, स्थिरचित, प्रियवादी, सत्यवाद, अदीनात्मा, आदि सभी गुण श्रीराम के आर्यत्व के प्रतीक हैं।

महर्षि विश्वामित्र अयोध्या क्यों आए?: श्रीराम को महाराज दशरथ ने अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छी से अच्दी शिक्षा दिलवाई, परन्तु महर्षि विश्वामित्र की दृष्टि से वह बहुत कम थी। उस समय आर्यावर्त के दक्षिणपथ से संस्कृति की एक बहुत बड़ी बाढ़ आ रही थी। उसका मुकाबला करना बहुत जरूरी था। यह काम वही कर सकता था जो सच्चे अर्थो में आर्य हो, संस्कृतिमान हो। इसके लिए श्रीराम को और भी बहुत कुछ सीखना आवश्यक था। महर्षि राम को न केवल अस्त्र-शस्त्र विद्या में ही पारंगत बनाना चाहते थे, अपितु देश के भूगोल व इतिहास का प्रत्यक्ष ज्ञान कराने के साथ-साथ वे उन्हें वैदिक संस्कृति का भी पूर्ण प्रशिक्षण देना चाहते थे जिससे वे उस संस्कृति के साथ भविष्य में होने वाले संघर्ष में कभी पराजित न हों। यह संकृति थी लंकाधीश रावण की। महर्षि वाल्मीकि ने लिखा है-''जब हनुमान जी लंका में गए तो उन्होंने देखा कि लंकानिवासी मांस और शोणित के भक्षक हैं, अर्धरात्रि के उस समय में राजमहल मद्यपान व मांस की गंध से भरा हुआ है, स्त्रियां निर्वसन होकर इधर-उधर अचेतनावस्था में लेटी पड़ी हैं, और रावण जो ब्राह्मण के प्रधान चिन्ह सुवर्ण यज्ञोपवीत, चंदन-लेप तथा कर्ण-कुंडल् आदि से अत्यंत सुशोभित हो रहा था, मद्यपान तथा रतिक्रीड़ा के बाद थक कर घोर निद्रा में पड़ा सो रहा है।'' ये सभी लक्षण इस बात का संकेत करते हैं कि रावण ब्राह्मण होकर भी वेद-विरूद्ध मार्ग पर चल रहा था, जो वेदों के विपरीत होने के कारण बाद में वाममार्ग कहलाया। इस वाममर्गी संकृति का आर्यावर्त में प्रचार करके उस देश की पवित्र संस्कृति का विध्वंस कर उसे अपने शासन में अंदर ले आना ही रावण का उद्देश्य था। (ठीक वैसे ही जैसे आक्रामक मुगलों और अंग्रेजों ने किया) धर्म व संस्कृति देश की रीढ़ होती है, उसे समाप्त कर दो तो देश अर्ध-जीवित हो जाता है और तब उसे कोई भी आसानी से अपने पैरों तले रौंद सकता है इसी लक्ष्य को सामने रखकर रावण ने मारीच और सुबाहु उत्तरापथ में सिद्धाश्रम भेजे थे ताकि वे मांस और खून बरसाकर महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ का विध्वंस कर दें और संस्कृति का विध्वंस-लीला प्रारंभ कर दें। बाद में जाकर इस वाममार्ग ने इस पवित्र यज्ञ के रूप का विध्वंस-लीला प्रारंभ कर दें। बाद में जाकर इस वाममार्ग ने इस पवित्र यज्ञ के रूप का विध्वंस किया, जिसके फलस्वरूप अश्वमेध आदि रूपों में घोड़े आदि पशुओं को मारकर उनके मांस व रक्त की आहुति दी जाने

लगी। पर, श्रीराम के समय में यह पद्धति नहीं थी और इसे अवैदिक समझा जाता था, अन्यथा महर्षि उसका विरोध न कर खुश होते कि उन्हें मुफ्त में ही यह सब मिल रहा है। महर्षि ने इस बढ़ते हुए संक्रामक रोग को अपनी दिव्य दृष्टि से देख लिया था और इस बात को महर्षि वशिष्ठ भी जानते थे, पर दशरथ को इन सब बातों की गंध भी नहीं थी। इसीलिए महर्षि विश्वामित्र अयोध्या आकर श्रीराम को अपने साथ ले गए। दूसरी ओर 14 वर्ष के वनवास से श्रीराम को मौका मिला कि दक्षिणपथ को इस रोग से मुक्त कर दें, और सीताहरण ने तो उन्हें लंका जाकर इस संकृति-रोग के मूल को ही नष्ट कर देने का स्वर्णिम अवसर प्रदान किया और उन्होंने रावण को समाप्त करके उसके स्थान पर आर्य विभीषण को बैठाकर फिर से लंका में आर्य संस्कृति की स्थापना की। कभी-कभी जिसे हम बुरी घटना समझते हैं उसका परिणाम अच्छा निकल आता है। इस प्रकार रामायण आर्य-द्राविड़-संघर्ष की कहानी नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं, अपितु संकृति पर विजय की गाथा है।

– पूर्व कुलपति, वैदिक यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका, लास ऐंजिलिस

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

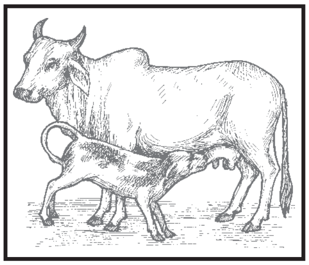

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

उपनिषद् जीवन के लिए महत्वपूर्ण

❐ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

बड़े-बड़े महानगरों व नगरों में व्यावसायिक उद्योगों में सेवारत सामान्य जन का जीवन अत्यधिक व्यस्त हो गया है घर से अंधेरे में उठकर जाना और देर रात्रि को घर आना ऐसा व्यस्त जीवन हो गया है परिवार के साथ बैठकर बात करने का भी समय बड़ी कठिनता से मिलता है उधर अधिकांश लोगों का जीवन रोग चिन्ता भय से ग्रस्त रहता है पारिवारिक कलह व अन्य चिन्ताएं घेरे रहती हैं। रात्रि को सुबह की चिन्ता और सुबह को रात्रि की चिन्ता सताए रहती है। सीमा से अधिक धनपति भी बहुत हैं बहुत से सोचते हैं कि धन ही सब कुछ है यह धन मेरा है मेरे साथ रहेगा और मैं सदैव ऐसा ही रहूंगा जीवित रहूँगा भौतिक साधनों का उपभोग करता रहूंगा परन्तु ऐसा नहीं यह सब शंकाएँ उपनिषदों के ज्ञान से निर्मल हो जाती हैं। धन दौलत से कोई अमर नहीं हुआ है।

ब्रहदारण्यक उपनिषद में वर्णन आता है कि जब ऋषि याज्ञवल्क्य अपना आश्रम छोड़कर जाने लगे तो मैत्रेयी से बोले-देखो मैं इस ग्रहस्थाश्रम में पड़े रहना नहीं चाहता मैं ऊपर उठना चाहता हूँ। मैत्रेयी ने कहा-महाराज यदि यह सम्पूर्ण धरा धन से पूर्ण हो मेरी हो जाय तो क्या मैं अमर हो जाऊँगी। ऋषि याज्ञवल्क्य ने कहा नहीं देवी जैसे सामान्य साधन सम्पन्न व्यक्ति चैन से जीवन निर्वाह करते हैं वैसा तुम भी करोगी। धन धान्य से अमर तो नहीं हो सकती तब मैत्रेयी ने कहा-

''येन अहं न अमृता स्याम् किमंह तेन कुर्याम्''

अर्थात् ''जिससे मैं अमर न हो सकूँ उसे लेकर मैं क्या करूंगी'' भगवान अमर होने का जो ज्ञान आप जानते हैं वह मुझे बताओ।

तब ऋषि ने मैत्रेयी को पास बैठा कर अमर होने का उपदेश दिया। यह ज्ञान आत्मा परमात्मा से सम्बन्धित था। जीवन में उन्नति का ज्ञान भी उपनिषदों में दिया है ऐसा ही एक मन्त्र अविद्यया मृत्युं तीर्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते-ईशोपनिषद अर्थात् जो ज्ञान और कर्म को साथ-साथ जानता है वह मुक्ति को प्राप्त करता है मनुष्य कर्म से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है तथा ज्ञान से अमरता प्राप्त करता है।

इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यं अस्ति,'
न चेत् अवेदीत् महती विनष्टिः-केन

इस जन्म में अध्यात्म को जान लिया तो ठीक है नहीं तो महान कष्टदायी है **यस्तु विज्ञानवान्भवित युक्तेन मनसासदा।** -कठोषनिषद

जो विज्ञान को अच्छी तरह जानते हैं उसका मन आत्मा में सदा लगा रहता है। **सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयान:** - मुण्डकोपनिषद्

सत्य की ही जीत होती है अनृत की नहीं।
विद्वानों का मार्ग सत्य से ही विस्तृत हुआ है।

वेद ज्ञान अमूल्य है उपनिषद वेद के सार हैं इनसे हमें चिन्ता भय शोक आदि दूर करने में सहायता मिलती है मानसिक शान्ति मिलती है अनेक रोग मानसिक विकृतियाँ उलझनाँ ईर्ष्या लोभ मोह आदि बन्धनों के कारण होते हैं यदि हम ईश्वर के मार्ग पर चले तो ऐसे रोगो से दूर रह सकते हैं। मनुष्य धन सम्पत्ति को अपनी मान कर जीता है जबकि संसार उस महान शक्ति परमपिता परमात्मा का है जो कुछ भी है हम प्रयोग कर रहे हैं उसका ही है ईशोपनिषद में पहला मन्त्र है।

ईशावास्यमिदं सर्वयत्किञ्च जगत्याम जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा ग्रधः कस्यसिद्धनम।। -ईशोपनिषद्

अर्थात् संसार में जो भी है हम देख रहे है सबसे ईश्वर व्यापक है जो भी हम धन आदि प्रयोग कर रहे हैं उसे त्याग के भाव से प्रयोग करें यह धन किसका है अर्थात् किसी का नहीं।

उपनिषद का ज्ञान हमारे जीवन में शान्ति व आत्मा में बल देता है। आज के भागदौड़ के व्यस्त व चिन्ता तथा भय ग्रस्त जीवन हेतु यह मन्त्र अत्यन्त सहायक हैं इनमें जीवन का सार है आत्मा को बल मिलता है जीने की शक्ति प्राप्त होती है आज धन आदि के लिए अज्ञानी लोग अपने भाई व सम्बन्धियों को मार देते हैं यदि यह मन्त्र पढ़े तथा समझे हो तो वह ऐसा कदापि न करेंगे ईश्वर को जानेंगे व मानेंगे यही तो वेद ज्ञान का जीवन में लाभ है वेद के ज्ञान से परिवार ही नहीं समस्त समाज उन्नति के मार्ग पर चल सकता है आनन्द मैं रह सकता है बुरे कार्य करने से डरता है ईर्ष्या लड़ाई झगड़ा का कारण ही अज्ञानता है अज्ञानता से ही दुराचार हो रहे है अतः उपनिषदों का ज्ञान जीवन के लिए उपयोगी है।

वेद व उपनिषद् ऐसे शास्त्र हैं जिनमें मानव मात्र के लिए ज्ञान दिया है किसी जाति वर्ग व्यक्ति स्थान विशेष के लिए नहीं है कोई भी इस ज्ञान का लाभ ले सकता है कहीं कोई पक्षपात नहीं है सभी के लिए लिए यह ज्ञान है इसी कारण यह ईश्वरीय ज्ञान है।

आज की भागदौड़ की व्यस्त दिनचर्या हेतु यह ज्ञान हमारे दुःखों में सहायता करता है। इनसे ही हमारी ईर्ष्या, लोभ, मोह, आसक्ति, बुराईयां दूर हो आनन्द प्राप्त होता है ईश्वर में प्रीप्ति होती है। हमारे मन की शंकाएं दूर हो जाती है, अंधकार से प्रकाश की ओर चलते हैं।

- चन्द्र लोक कॉलोनी, खुर्जा-203131

क्यों?

एक ही देश के रहने वाले
एक ही अन्न जल से पलने वाले
भाई-भाई का नारा लगाने वाले
हम में इतना दुराव छिपाव
इतना भेदभाव अविश्वास क्यों है?
सब कहते हैं धर्म जोड़ता है
अच्छे विचार संस्कार देता है
नेकी और भलाई की राह बताता है
एक दूसरे से प्रेम करना सिखाता है,
एक दूसरे की सहायता करना
बताता है समझाता है
फिर हम बात-बात पर लड़ते क्यों हैं?
धर्म के नाम पर झगड़ते क्यों हैं?
नफरत क्यों फैलाते हैं
आतंकवादी बन अपनों का ही खून
बहाने का सोच भी कैसे पाते हैं?
क्यों? क्यों? क्यों? क्यों?

-ओमप्रकाश बजाज

विजय विला, 166-कालिंदी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड,
इंदौर-452018, म.प्र. फोन-0731-2593443

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2016 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से युवाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें।

1. वॉलीबॉल (शूटिंग) टुर्नामेन्ट
(सौराष्ट्र प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए)

- विजेता टीम को शिल्ड प्रदान किया जाएगा।
- विजेता खिलाड़ियों, बेस्ट शूटर व बेस्ट नेटी को पुरस्कृत किया जायेगा।
- प्रवेशपत्र दिनांक 25 फरवरी-2016 तक स्वीकृत होंगे।
- यह टुर्नामेन्ट दिनांक 01 से 05 मार्च 2016 के बीच में होगी।

2. महर्षि दयानन्द खेल महोत्सव
(टंकारा तहसील के विद्यार्थियों के लिए)

- कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाई-बहन भाग ले सकेंगे जिसमें विभिन्न मेदानी खेलों की प्रतियोगिता होंगी, जिसकी जानकारी विद्यालयों को अलग से दी जायेगी।
- विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रमाणपत्र दिये जायेंगे।

3. प्रश्नमंच प्रतियोगिता
(सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

- महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, आर्यसमाज के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जायेंगे।
- कक्षा 8 से 10 तक के छात्र भाग ले सकते हैं।
- एक विद्यालय से दो विद्यार्थी भाग ले सकते हैं।
- भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 25 फरवरी 2016 तक संयोजक को पहुंचा दे।
- प्रथम सिलेक्शन राउन्ड (लिखित) दिनांक 06.02.2016 को प्रातः 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 15 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2:00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में मुख्य मंच पर होगा।
- संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र, प्राचीन वैदिक सिद्धान्त ज्ञान पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं।
- प्रथम तीन विजेताओं को नकद पुरस्कार क्रमशः 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा।
- प्रत्येक को प्रमाणपत्र दिया जायेगा।
- बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा आने-जाने का किराया दिया जायेगा।
- भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी।

4. डॉ. मुमुक्षुः आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षुः आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है, जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना फोटो के साथ अपने गुरुकुल के प्राचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

- बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा।
- एक गुरुकुल से अधिक से अधिक दो ब्रह्मचारी भाग ले सकेंगे।
- भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी।
- भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 25 फरवरी 2016 तक पहुंचा देवे।
- यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 06.03.2016 दोपहर 2:00 से 5:00 के सत्र में होगी।

अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव
(प्राचार्य म.द.उपदेशक महाविद्यालय)
टंकारा-363650 (जिला-मोरबी)
गुजरात, मो. 9913251448

हंसमुख परमार
प्रतियोगिता संयोजक
मो. 9879333348

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 17 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 013001010111O898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

अश्वों को ढंग से जोड़ो

❒ महात्मा चैतन्यमुनि

वेद कहता है.....पृश्निर्भवतु देवगोपा (ऋ. 7-35-13) हमारे लिए वह अजन्मा, एकरस, अहिंसक, बोध करने योग्य परमात्मा शान्तिदायक हो। सूर्य-मेघ, समुद्र, आकाश एवं जलादि भी सभी शान्तिदायक हों। प्रसंगानुसार पृश्नि के विद्वानों ने बहुत से अर्थ किए है। कहीं-कहीं पृश्नि को वेद-विद्या तथा स्पर्श करने वाली आत्मा भी कहा, जिनका सही-सही प्रयोग करने वाला व्यक्ति सुख-शान्ति आदि को भली प्रकार प्राप्त करता है। सत्व, रज और तम के रंगों वाली यह प्रकृति भी पृश्नि है, इसे अदिति और गौ भी कहा है। हम आत्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही इसका उपयोग करें। प्रकृति आत्म-ज्ञान प्राप्त करने लिए एक उत्तम साधन है अत: इसे साध्य मानने की कभी भूल न करें। आज वास्तव में दु:ख, कष्ट और क्लेश एवं अशान्ति का कारण मुख्यत: यही है कि हम प्रकृति के गुलाम बन गए हैं। हम साधन को ही साध्य मानने की भूल कर रहे हैं। निश्चित् रूप से यदि हमें प्रकृति का सही ढंग से उपयोग लेना आ जाए तो हम अपने जीवन के लक्ष्य को भली प्रकार प्राप्त करके सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त कर सकते हैं....अन्यथा यदि इसका दुरुपयोग करेंगे तो इसके विपरीत ही परिणाम होंगे। यदि हम परमात्मा की व्यवस्था को तोड़ेंगे तो उसका कठोर दंड भी हमें भोगना ही होगा। वेद कहता है-

सत्यमहं गभीरः काव्येन सत्यं जातेनास्मि जातवेदा:।
न मे दासो नार्यो महित्वा व्रतं मीमाय यदहं धरिष्यते॥

- (अथर्व. 5-11-3)

उस गंभीर, व्रतशील तथा जातवेद के नियमों को कोई तोड़ नहीं सकता चाहे वह दास हो या आर्य.... और यदि नियमों को तोड़ेंगे तो उसका कुफल भी परमात्मा की न्याय-व्यवस्था में भोगना पड़ेगा। परमात्मा ने हमें यात्रा सिद्ध करने के लिए जो अश्व दिए हैं उन्हें सही दिशा में चलाने की आवश्यकता है। आत्मा को यही आदेश प्रभु ने दिया है-**युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। आरं वहन्त्याशवः॥** (सा. 25) हे आत्मा! (ये) जो (तव) तेरे (साधवः) यात्रा को सिद्ध करने वाले (अश्वासः) घोड़े हैं, उन्हें ही (युङक्ष्व) अपने रथ में जोड़ों, जो कि (आशवः) मार्ग को शीघ्र व्यापक करने वाले (अरम्) सुन्दरता से (वहन्ति) रथ का खूब वहन करने वाले हैं।

वृ.उप. (अ.ब्रा.) में एक विलक्षण पशु का वर्णन है जिसे स्वर्गगामी अश्व कहा है। यह अश्व पृश्नि ही है जिसके सम्बन्ध में उपनिषद् में कहा है कि इस घोड़े का सिर उषा है, चक्षु सूर्य, प्राणवायु, मुख अग्नि, आत्मा संवस्तर, पीठ द्यौलोक, पेट अन्तरिक्ष (अन्तरिक्ष उतोदरम्) पसलियां दिशाएं, दिन-रात पैर और हड्डियां नक्षत्र-तारे आदि हैं.... इस अश्व को स्वर्गगामी अर्थात् सुख तक ले जाने वाला कहा गया है मगर आज अधिकतम लोगों को इसका दुरूपयोग करते हुए ही देखा जाता है। जिससे यह स्वर्ग तक ले जाना नहीं बल्कि नरक तक ले जाने वाला बन गया है। देव, मनुष्य, गन्धर्व और असुर सभी इसी घोड़े पर सवार हैं मगर देवों का लक्ष्य-स्वर्ग प्राप्ति एवं मोक्षादि की प्राप्ति है, मनुष्य का लक्ष्य केवल आनन्द-मोद मनाना है, गन्धर्व का लक्ष्य केवल भोगों को भोगना मात्र है। उन भोगों को भोगते-भोगते काम, क्रोधादि झाड़ियों में उलझकर रह जाना है। असुरों का लक्ष्य अपने स्वार्थ के लिए मार-काट आदि करना और अन्तत: स्वयं भी अनेक प्रकार के कष्टों और मुसीबतों में फंस जाना है। उपनिषद् की इस बात को हम एक दृष्टान्त से भली प्रकार समझ सकते हैं। किसी एकान्त स्थान पर एक ही पेड़ के नीचे जाने पर साधक, कवि, जुआरी, शराबी, व्यापारी और विलासी की अलग-अलग भावनाएं बन जाती है। साधक सोचेगा कि देखे उपासना के लिए कितना अच्छा स्थान है, कवि सोचेगा कि किसी उत्तम काव्य की रचना करने के लिए यह स्थान उपयुक्त हैं। जुआरी सोचेगा कि जुआ खेलने के लिए यह बहुत ही उपयुक्त स्थान है। शराबी को यह स्थान शराब पीने के लिए अच्छा लगेगा, व्यापारी पेड़ की लकड़ी बेचने से उसे कितना लाभ हो सकेगा इस बात पर चिन्तन करेगा और विलासी के लिए वह स्थान अपने विलास के लिए अच्छा लगेगा...। एकान्त स्थान और पेड़ तो समान ही है मगर भावनाएँ सबकी अलग-अलग हैं। ठीक इसी प्रकार उपनिषद कहता है कि देवों के लिए यह अश्व 'हय' बन जाता है। अर्थात् देव यहाँ आकर योगानुष्ठान एवं साधना-उपासना और निष्काम कर्म करता हुआ अपने जीवन को सफलता प्रदान करता है। मनुष्यों के लिए यह घोड़ा 'अश्व' है। मनुष्य मानव जीवन पाकर यहाँ पर यज्ञ, दान, परोपकारादि पुण्य कर्मो को करके जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। गन्धर्वो के लिए यह 'वाजी' है। अर्थात् वे इसमें भोग-विलासादि की पूर्ति करने की ही यात्रा करते हैं। असुरों के लिए यही पृश्नि 'अर्वा' बन जाता है अर्थात् वे हिंसक होकर अपने स्वार्थ के लिए मार-काट आदि करके इस जीवन को अपने लिए तथा औरों के लिए भी और अधिक कष्टप्रद बना लेते हैं.... वेद में संसाररूपी नदी को अनेक पत्थरों (रूकावटों, पापरूपी बोझों) वाली बताया गया है और साथ ही इससे पार उतरने के लिए बहुत ही सुन्दर युक्तियाँ भी दी गई है-

अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमो अशिवा ये असन् शिवान् वयमुत्तरेमाभिवाजान्॥

- ऋ 10-53-8, अ. 12-2-26)

मन्त्र कहता है कि इसे पार करने के लिए **(संरभध्वम्)** एक-दूसरे के साथ मिलकर चलो। वेद में अन्यत्र भी कहा गया है कि मिलकर चलो... आपस में एक-दूसरे से ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने नवजात बछड़े को करती है..... मन्त्र में दूसरी बात कही गई है कि **(वीरयध्वम्)** तुम वीरतापूर्वक और धैर्यपूर्वक कार्य करो। संसार में आत्मविश्वास से बढ़कर और कोई बल नहीं है। आगे बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही कि **(दुरेवाः असन् अत्रा जहीत)** दुराचरण को यहीं पर छोड़ जाओ अर्थात् सदा ही सदाचरण का अनुसरण करो। यह ध्रुव सत्य है कि अन्ततः दुराचारी नाश व पतन को ही प्राप्त होता है और सदाचारी उत्थान को....। आगे कहा कि **अनमीवाम् वाजान् अभि)** अपनी आत्मिक शक्तियों को साथ लेकर चलो। आत्मा की शक्तियाँ सदा ही सत्यमय होती हैं.... और सत्य की सदा विजय ही होती है। आत्मा के जो स्वाभाविक गुण हैं उनका कभी भी त्याग नहीं करना चाहिए। इसीलिए मन्त्र कहता है कि भद्रताओं को, धर्म को, सत्य को, यज्ञादि को, और परोपकार आदि को अपने जीवन का अंग बनाकर चलो।

परमात्मा ने हमें जो भी प्राकृतिक साधन दिए है, कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ और अन्तःकरण दिया है उसका हमें सही-सही प्रयोग करना आना चाहिए। इतना भर करने से ही हमारे जीवन को सार्थकता प्राप्त हो सकती है। यह प्रकृति, वाह्यकरण और अन्तःकरण ही वे घोड़े हैं जिन्हें कुशलता के साथ, ठीक प्रकार से जोड़कर हम अपनी यात्रा को सही ढंग से पूरी कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में कठोपनिषद् का ऋषि कहता है कि-

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मानीषिणः॥ -(कठो. 3-3.4)

इस आत्मा को रथी, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि और मन को रस्सवी समझना चाहिए। ये इन्द्रियाँ घोड़े हैं, इन्द्रियों के विषय मार्ग हैं जिन पर घोड़े दौड़ते हैं। मनीषी लोग कहते है कि जब आत्मा, इन्द्रियाँ तथा मन मिलकर कोई काम करते हैं तब मनुष्य भोक्ता कहलाता है। क्योंकि आत्मा प्रमुख है अतः उसी के द्वार साधिकार इन समस्त उपकरणों का प्रयोग होगा तभी लक्ष्य की प्राप्ति होगी।...

- महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर-174401 (हि.प्र.)

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

ओ३म् का दीप

दिन रात यही धुन गाता हूँ,
मैं ओ३म् का दीप जलाता हूं,
घर-घर संदेश पहुंचाता हूं,
मैं ओ३म् का दीप जलाता हूं।
ओ३म् नाम है जान से प्यारा,
लगता हम सबको है प्यारा,
मैं इसी में ही सुख पाता हूं,
मैं ओ३म् का दीप जलाता हूं।
दुनिया की परवाह नहीं करना,
ओ३म् में जीना ओ३म में मरना,
मैं गीत ओ३म के गाता हूं,
मैं ओ३म् का दीप जलाता हूं।
बहे सबके घर में ओ३म् की धारा,
सबका जीवन हो जाये प्यारा
मैं जीवन का गीत सुनाता हूं,
मैं ओ३म् का दीप जलाता हूं।
अन्धविश्वास को अब त्यागो,
घर-घर ओ३म् का दीप जगा दो,
मैं ओ३म् से रखता नाता हूं,
मैं ओ३म् का दीप जलाता हूं।

-ऋषि राम कुमार, 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुड़गांव (हरियाणा)-122002

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आत्मविश्वास, आस्था का अनन्य समन्वय एक युवक

❑ त.शि.क.कण्णन

भारत विभाजन के 7 वर्ष उपरान्त आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में जब एक नन्हे आर्यपुत्र अजय ने जीवन के शाश्वत मूल्यों के ज्ञान के स्तुत्य ''गायत्री'' मन्त्र की अपने ही स्वर में प्रस्तुति की, तो आर्य समाज का वह भवन छोटे से बालक के अलौकिक मधुर गान से क्षण भर के लिए स्तम्भित हो गया, तालियों की गड़गड़ाहट में एक वृद्धा माता ने अपने लड़खड़ाते हुए वाक्यों में आशीष देते हुए कहा, ''हम प्रति सप्ताह परमपिता परमात्मा से अर्चना के शब्दों में जो भावभीनी प्रार्थना करते हैं कि आर्यसमाज की इस पावन संस्था के सत्य, प्रकाश, शक्ति, प्रेम प्रीति से पुष्ट जिसके हाव भाव को देखकर जिस समर्थ मानव की खोज में हैं, वे सभी-पुण इस बालक की दृढ़ता में दिखाई देते हैं। वृद्धा माता का स्वप्न साकार हुआ। 60 वर्ष का वही बालक/अजय सहगल सभी के स्नेह सूत्र का परिचायक है।

आर्य समाज की आपूर्ण गतिविधि में प्रिय अजय जी ने सर्वदा अपने मित्रों व हितेषियों से संस्था की अनवरत आस्था सुदृढ़ीकरण के लिये स्वयं को अर्पित किया है और यह भी कितनी महिमा मण्डित कार्यप्रणाली की अनुपम रीति है कि सभी ने श्री अजय जी के श्रेष्ठतम विचारों की प्रशंसा करते हुए उनकी भावना को शक्ति सम्पन्न किया है। अजय जी ने समाज की कितनी मनभाती रेखा चित्रित की है।

आर्य समाज की मानवता की महती सेवा, समाज के समृद्ध ज्ञान को, दिव्य सिद्धान्तों को, कार्यक्रम को हम अपनी श्रद्धा के अनुरूप जो कुछ भी प्रदान करें वह हमारी भगवन् की शुचिता की एक रम्य स्तुति है।

निष्कपट मन से जो सज्जनों का सम्मान है, वही व्यक्ति आर्यत्व की परिधि में समाविष्ट हो जाता है, क्योंकि आर्यत्व, आत्मीयता का स्वरूप ही अनुराग है, प्रेम पथ का स्वरूप ही आर्यत्व का परिचय, पहचान है, अतः कहा है न ''आत्मवत् सर्वभूतेषु''।

अजय जी के पास कोई भी, कहीं भी, कभी-भी पहुंच जाय और वह अपनी बात को एक विनम्र, अनुरोध से कहता है। अजय जी का मधुर उत्तर'' आपका काम हो जायेगा।'' आर्य भाई के मनोवेगों की स्वीकृति को उन्मुक्त हृदय से प्रदान करना उनका प्रकृति प्रदत्त प्रीति गुण है।

''अरे भाई पण्डित जी। आपका काम हो जायेगा, क्यों नाहक चिन्तित होते हो। प्रभु का आशीर्वाद आपके साथ है।

उनके पूज्य पिताजी श्री रामनाथ जी सहगल ने, प्रिय अजय जी को दो बातें सिखाई।

''मैं तुम्हें एक शिक्षा देना चाहता हूं, स्वर्गीय श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी ने यही प्रीति की बात मुझे बताई थी। तुम जीवन में सर्वदा ''मीत'' को अपनाना। सभी बन्धुओं, बहनों को अपने परिवार का एक अंग समझना। बस यही मधुरता अपनत्व का सूत्र है अजय भैया का समस्त प्रेरणाओं का स्रोत है।''आर्य समाज'' श्रद्धेय महर्षि दयानन्द सरस्वती का ही वह ज्योतिर्भय तत्व है, जिसने उन्हें अपनी इस बढ़ती उम्र में भी शक्ति पुंज बनाया है। आज हमारे समाज में इन जैसे सत्पपुरुषों नवयुवकों का अनन्त बात है। ''तमस:परस्तात्'' दूसरों के प्रति मन में समाहित बाधायें दूर हो जाती हैं। तब समाज का प्रत्येक घटक उन्हें सर्वप्रिय मितभीषी प्रतीत होता है। आर्यसमाज के भावी अभ्युत्थान के लिए कृत संकलप हैं। उनके तन-मन में समाज की प्रीतिपरक अनुभूति ही उन्हें दृढता से कर्म/प्रेरित करती है मुझे संस्कृत की यह पंक्ति श्री अजय जी के व्यक्तित्व के प्रति कितनी सटीक लगती है।

''नृपति जन पदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता'' आज समाज में सच्चे साधकों का, सहवासियों का, कार्यकर्त्ताओं का नितान्त अभाव है। तुम आर्यसमाज में बिना किसी असमंजस के अपने उदार चित्त को आर्यसमाज के कार्यों में स्व को समर्पित करो और इस विश्वास से कि निश्चित रूप से हम अपने ध्येय में परिपूर्ण सफल होगें।

''प्रवर्तियों दीप इव प्रदीपात'' श्री रामनाथ जी सहगल ने अपने ज्ञान से, अनुभव से, व्यवहार से, आत्मीयता से जो दीप प्रज्वलित किया था। उस दीपक की कमनीय ज्योति से आर्यसमाज का प्रांगण ज्योतिष्मान हो उठा है और पिता जी की वार्द्धक्य स्थिति को देखते हुए तथा त्याग की पृष्ठभूमि में तन्मयता से समाज के ऊर्ध्वारोध्य का आपने जो दिव्य व्रत लिया है। वह अनुपम है। अनुकरणीय है भाई अजय।

आपके पूज्य पिताजी ने अपनी असीम तपस्या, आत्मविश्वास निष्ठा से जिस तरह आर्यसमाज को प्रशस्त करने में अपना प्रमुख योगदान किया है। वह श्लाघनीय एवं वर्चस्विता से पूरित है। श्री अजय जी आपने पूज्य पिता जी के पद चिन्हों पर चलते हुए साठोत्तरी का मनमाता वन्दनीय व्रत का प्रशंसनीय पक्ष लिया है।

कल तक हम अपनी प्रशस्त्र परम्परा तथा भव्य संस्कृति से अनुस्यूत होकर प्रज्ञावान, प्रभावान, प्रतिभावान प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठित पुरुष थे, उमंग उत्साह से स्वयमेव ही आगे आकर समाज की पवित्रता को अक्षुण्ण रखने की प्रतिज्ञा की थी, महर्षि की महिमा के कारण समाज का भारत की सामाजिक स्थिति को सुधारने का सुगठित संबल था।

आज हम अपनी ही संयत सीमा में ही सीमित हो गए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने उज्जवल व उन्नत परक मस्तिष्क की अनवरत ऊर्जा से प्रस्फुटित, विशाल प्रतिष्ठित संस्था की जो विशद व्याख्या की थी। वह सब हमारी निष्क्रियता से न जाने कहां तिरोहित हो गई है।

आज तक महर्षि की महिमा मण्डित अदृश्य शक्ति प्रेरणा से ही आत्म विश्वास, आस्था, संकल्प, विनम्रता से युक्त श्री अजय जी सहगल ने पिछले कई वर्षो से महामना मालवीय जी इस पंक्ति को ''तस्मात् मूलं यत्नतो रक्षणीयम्'' महर्षि की महती भावना अदम्य उत्साह को ध्यान में रखकर समाज के विशिष्ट भार को सामर्थ्य पूर्वक निभाने

उम्र छोटी, काम बड़े

उम्र छोटी और काम बड़े।
लेते हम तो संकल्प कड़े।।
फूल उगा कर धरा सजाएं।
कण-कण इसका हम महकाएं।।
पौधे रोपें, हम हर्षाएं।
पर्यावरण को शुद्ध बनाएं।।
प्रदूषण का नाम मिटाना।
ऐसा हमने मन में ठाना।।
अंम्बर को छूना हमको आता।
श्रम से जुड़ो हमारा नाता।।
साहस-हिम्मत हमारे पास।
'प्रसाद' होते न कभी उदास।।

-रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

बाल साहित्यकार, पो. आ. सिंहाल (कांगड़ा)

में आपूर्ण प्रयन्त किया है। मैंने उनकी कार्यप्रणाी को प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

श्री अजय सहगल जी ने बचपन से ही आर्य नेताओं की त्याग, तपस्या को निकट से देखा है। संस्था की सुगढ़ता के अनुरूप जागरूकता से कर्तव्य निष्ठा को सम्मुख रखा है। भाई अजय जी के लिए मुझे भर्तुहरि की एक पंक्ति अत्यन्त उपयुक्त लगती है।

''मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:खं न सुखम्''।

किसी भी उद्यमी कार्यकर्त्ता के लिए पुन: अपनी संस्था की प्रतिष्ठा के लिए अपने कष्ट, दु:ख, सुख सुविधा की चिन्ता दूर रहती है।

कल तक 'टंकारा' शहर या गांव हमारी सोच, विचार की कल्पना से बाहर की बात थी। आज ''टंकारा'' शहर की स्थिति महर्षि दयानन्द की वर्चस्विता का, विद्वता का एक सुदृढ़ प्रकाश स्तम्भ की भांति प्रबुद्ध एवं प्रभावकारी प्रभुता का आवास है। आर्य भाइयों का कीर्ति स्थान हो गया है।

रात के 12 बजे हैं। दिन भर सम्मेलन के सम्पूर्ण कार्यक्रम को सुचारू रूप से सम्पन्न कर, सभी अतिथियों की सेवा, शुश्रूषा के पश्चात् थोड़ा विश्राम करने का प्रयत्न किया। तभी कार से एक तपस्वी आर्यव्रती सज्जन उतरते हैं। श्री अजय जी के कमरे में उन्होंने विश्राम किया। सुबह उठकर श्री अजय ने हंसते हुए पूछा श्रीमान जी मेरे अस्त, व्यस्त, ऊबड़-खाबड़ कमरे में बढ़िया आराम, विश्राम कहां मिला होगा। थकावट तो पूरी तरह दूर हो गई होगी।

आज टंकारा की स्थिति कितनी सुरम्यता से पूरित एक सुनहली संस्था है।

कवि कालिदास के पश्चात् भवभूति कवि ने संस्कृत साहित्य को विपुलता प्रदान की है। उनकी यह पंक्ति मुझे सर्वदा सुहाती है।

''सर्वथा व्यवहर्तव्यम, कुतोह्यवचनीयता''

बस तन मन से अपनी संस्था के सर्वतोभद्र कल्याण के लिए अपना काम पूरा करना चाहिए। निन्दा से कहां मुक्ति है। कितना भी अच्छा काम करो, कुछ लोगों को यह खलता है। यह मानव की सहज धारा है, जब आप संस्था या व्यक्ति के लिए कोई भी सुकृत क्यों न करें, आपके सहयोगी, मित्र, परिचित परिजन कुछ अनचाहा उसमें देखने का प्रयत्न करते हैं।

मेरे प्रिय श्रीयुत अजय सहगल जी के सम्बन्ध में लिखित इस लेख का उद्देश्य यही है कि आर्य समाज के दिव्य कार्यक्रमों के प्रति अपने मित्रों की अभिरूचि को जाग्रत करना है।

यह लेख मात्र श्री अजय जी की प्रतिभा का प्रकाश अथवा निरूपण ही नहीं है, अपितु समाज अन्य साथियों, मित्रों कार्यकर्त्ताओं से यह आशा की जाती है कि जिस आशा विश्वास से महर्षि पूज्यवर दयानन्द जी सरस्वती ने जनता में प्रभु के सात्विक गुणों को आत्मसात करने के लिए जिन सद्गुणों को दृढ़ता पूर्वक अपनाया था बस उसी तत्व को, भावना को आप भी अन्तर्मन से स्वीकार कर समाज की बहुविद्या सेवा सम्पन्न कर समाज का कल्याण करें। भारतवर्ष की जनता आज भी धर्म के प्रति सर्वदा लालायित रही है। वह धर्म की उस महिमा को, ललित को लालित्य को, ओज को, तेज को, देखने के लिए, जानने के लिए जीवन भर आशा भरी नजरों से अन्तरिक्ष को विवृत हृदय से झांकती है और प्रभु से विनम्र प्रार्थना करती है कि एक बार फिर दयानन्द सा, महापुरुष, महाविद्वान, भारत को सुशोभित करने के लिए भेजिए। ताकि वेदों का प्रसार, प्रचार हो सके। धर्म के प्रति लोगों की जो अन्धी आस्था है उसे सुमार्ग प्राप्त हो सके।

श्री अजय सरीके अनन्त अजय पुत्रों को पुन: विलक्षणता से आपूरित कर माता की गोदी को पुण्यभय करें। आज दूरदर्शन में न जाने कितनी संस्थाओं द्वारा धर्म के विविध रूपों का विश्वास एवं आस्था के आधार पर परिचय दिया जा रहा है, पूजा, भक्ति, स्तुति के अनेक रूपों का अपने-अपने इष्ट देवों की मान्यता के अनुकूल नाना प्रकार की पूजा विधियों को प्रस्तुत किया जा रहा है। विभिन्न संस्थाओं की दीक्षित विषम, विस्मृत पूजा का रूप रंग इतना विकृत, विस्मित, विदीर्ण हो गया है कि आज का हमारा पूर्णत: शिक्षित नागरिक भी परिवार के सुखद भविष्य के लिए सभी प्रकार की रूढ़ी वृत्तियों को सत्य समझकर अपनाता है या अपनी सीमित शिक्षा के आधार पर दिरक्त हो जाता है।

हमारी परम पिता से यही मांगलिक प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपनी आस्था तथा स्थिति के अनुयप वेदों के सर्वज्ञ ज्ञान का अध्ययन करते हुए राष्ट्रीय भावना का, हमारे सुरूचि पूर्ण वेदों के अनुकूल पूजा की वास्तविक स्थिति के अनुसार धार्मिक विधि का पवित्रता से पालन करें। यही सन्देश इस लेख का प्राण हैं।

– मो. 09841094455 (चेन्नई)

लम्बी उम्र का राज

सुबह की सैर, समय पर खाना।
भूलता ना यह नियम पुराना।।
जल्दी उठना, जल्दी सोना।
ठण्डे जल से आँखे धोना।।
छल-कपट न हृदय-वास।
करता कभी ना मन-उदास।।
हँसना भी दिनचर्या-अप्रंग।
यह है मेरे जीने का ढंग।।
अनुशासन में रखता विश्वास।
रोग न फटके मेरे पास।।
खान-पान में संयम रखता।
चटपटा भोजन कभी न चखता।।
करता नहीं मैं धूम्रपान।
ताजे जल से करूं स्नान।।
हवन-यज्ञ घर में नित करता।
सुखों की मैं झोली भरता।।
वेद वचनों पर रख विश्वास।
रखता रहता मैं उपवास।।
लम्बी उम्र का समझो राज।
बुढ़ापे में भी करता नाज।।
सोच हमेशा अच्छी रखता।
नहीं किसी को मैं हूं खलता।।
कहे वचन 'प्रसाद' कविराय।
स्वास्थ्य के समझो उपाय।।

-रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

बाल साहित्यकार, पो. आ. सिंहाल (कांगड़ा)

अपील

सभी आर्य बहनों से नम्र निवेदन कर रही हूं कि वह ऋषि भूमि टंकारा से अवश्य ही जुड़े, वहां पर होने वाले कार्यो को ध्यान से देखें। बड़े ही अच्छे अच्छे कार्य हो रहे हैं। उन कार्यो में अपना सहयोग देकर ऋषि ऋण उतारने की कोशिश करें और यह हम आर्य बहनों का कर्त्तव्य भी है। टंकारा हमारा तीर्थ स्थल है, वहां कार्यो की बहती गंगा है-गुरुकुल में बच्चों को पढ़ा सकते हैं, छोटे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं-विशेषकर महिला सिलाई केन्द्र में सहयोग देकर बड़ा ही भला काम कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वहां लगातार रहना होगा। वर्ष में दो तीन बार जाकर सेवा कर सकते हैं। जो बहन वहां जाने की इच्छा रखती हो, वह कृपया मेरे से सम्पर्क करें, तो मैं विस्तृत रूप से बताकर पूरा सहयोग दूंगी।

- राज लूथरा, जी आई 976, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली-110023, मो. 9971206548

सर्वं वै पूर्णं स्वाहा

રમેશ મહેતા ૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ – ૯૩૨૭૦૨૬૯૭૦

ભારત મહાપુરુષોને જન્મ આપવાવાળી વસુંધરા છે. અનેક ઋષિ-મુનિઓએ જન્મ લીધો છે, જેમણે વેદાજ્ઞાનુસાર આદર્શ જીવન વ્યતીત કર્યું. અનેક ઋષિ-મુનિઓએ મહાન કામ કર્યા, પરંતુ તેઓએ ન તો પોતાનું આત્મ વૃતાંત લખ્યા છે કે ન પોતાનો પરિચય સાહિત્યાદિના માધ્યમથી મૂકી ગયા છે. કેટલાંક ઋષિઓએ અનેક ગ્રન્થોનું સર્જન અને રચના કર્યા છે. એમના સાહિત્યમાં ઈતિહાસમાં થયેલા કેટલાક પ્રમુખ ઋષિઓના નામોનો ઉલ્લેખ છે. એવી જ રીતે આ ઋષિઓના ગ્રન્થો પર બીજા ઋષિઓએ ભાષ્ય આદિ ટીકાઓ લખીને જન-સાધારણનું કલ્યાણ કર્યું છે. એમાં પણ કેટલાંક ઐતિહાસિક ઋષિઓના નામ સુરક્ષિત છે. મહર્ષિ વાલ્મિકીએ રામાયણ લખીને સ્વયં ભગવાન રામચન્દ્ર, રામાયણ કાળના કેટલાક ઋષિઓ અને રાજાદિના નામ અને ઈતિહાસને સુરક્ષિત કર્યા છે. રામાયણ પછી સહુથી મોટો અને પ્રમુખ ગ્રન્થ મહાભારત છે. એમાં એ સમયના અનેક રાજાઓ અને વિદ્વાનોનું વર્ણન છે, જેમાંના એક અતિ પ્રતિષ્ઠિત મહાપુરુષ શ્રી કૃષ્ણ છે. મહાભારતના કાળ પછી યુધિષ્ઠિરના વંશમાં અનેક રાજા મહારાજા થઈ ગયા. એ બધાના નામ કે વૃત્તાંત સુરક્ષિત નથી, પરન્તુ મહર્ષિ દયાનન્દજીની કૃપાથી સત્યાર્થપ્રકાશમાં એક સૂચી જોવા મળે છે જેમાં રાજા યુધિષ્ઠિરની વંશ પરમ્પરામાં ક્ષેમક સુધીના રાજાઓ અને એમના રાજ્યકાળનું વિવરણ વર્ષ, મહીના અને દિવસ સુધીની ગણના કરેલી છે. આ કૂળ ૩૦ પેઢીઓના ૧૭૭૦ વર્ષ ૧૧ મહીના અને ૧૦ દિવસોનો સંક્ષિપ્ત ઈતિહાસ અને વિવરણ છે. ત્યાર પછીના રાજાઓથી લઈને સંવત ૧૨૪૯ વિક્રમી સુધી રાજા યશપાલના શાસનકાળ સુધીનું વિવરણ સત્યાર્થપ્રકાશમાં અંકિત થયેલું છે. આમ અત્યારથી લગભગ ૮૨૩ વર્ષ પહેલા સુધીના રાજાઓનું વિવરણ મહર્ષિ દયાનન્દની કૃપાથી આજે દેશની જનતા માટે સુલભ થયેલું છે. જ્યારે ભારતની જ્ઞાન વિજ્ઞાનથી યુકત વેદકાલીન પ્રાચીન ધર્મ અને સંસ્કૃતિ પર વિચાર કરીએ ત્યારે આપણને અનેક ધાર્મિક ગ્રન્થોના રચયિતા ઋષિ મુનિઓ સહિત આદર્શ રાજા શ્રી રામ, યોગેશ્વર કૃષ્ણ, રાજનીતિના આચાર્ય મહાત્મા ચાણકય, સ્વામી શંકરાચાર્ય અને મહર્ષિ દયાનન્દનું જ્ઞાન થાય છે, જેમણે પોતાના સમયમાં મહાન કાર્યો કરીને આ દેશ અને વિશ્વના ધર્મ અને સાંસ્કૃતિક વાતાવરણને પ્રભાવિત કર્યા છે. આજે આપણે સ્વામી દયાનનદ સરસ્વતી પર વિચાર કરીએ.

મહર્ષ્ દયાનન્દે ૧૮૪૭માં પોતાની આયુના ૨૨ માં વર્ષે સાચા શિવ, મૃત્યુ પર વિજય અને સદ્જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ માટે ગૃહત્યાગ કર્યો હતો. ઈ.સ. ૧૮૬૦માં તેઓ મથુરામાં પ્રજ્ઞાચક્ષુ ગુરુ વિરજાનન્દજીની કુટિરમાં પહોંચ્યા અને લગભગ ૩ વર્ષ સુધી એમની પાસે આર્ષ વ્યાકરણ, વેદ અને વૈદિક સાહિત્યનું અધ્યયન પુરું કરીને ૧૮૬૩માં ગુરુની પ્રેરણા અને આજ્ઞાથી દેશ અને ધર્મમાં સુધારા માટે કાર્યક્ષેત્રમાં પ્રવેશ્યા. નવેમ્બર ૧૮૬૯માં કાશી નરેશની મધ્યસ્થતામાં કાશીના લગભગ ૩૦ વિદ્વાનો સાથે મૂર્તિપૂજા પર ઈતિહાસ પ્રસિદ્ધ શાસ્ત્રાર્થ કર્યો હતો. આ શાસ્ત્રાર્થમાં લગભગ ૫૦ હજાર લોકો હાજર હતા. પૌરાણિક વિદ્વાનો મૂર્તિપૂજાને વેદ વિહિત સિદ્ધ ન કરી શકયા. પછી એમણે ધર્મ અને વેદ પ્રચાર માટે મૌખિક ઉપદેશ તેમજ વાર્તાલાપ સહિત શાસ્ત્રાર્થ આદિ દ્વારા પ્રચાર કર્યો અને પોતાના મન્તવ્યોના પ્રચારાર્થે સત્યાર્થપ્રકાશ, ઋગ્વેદાદિ ભાષ્યભૂમિકા, સંસ્કાર વિધિ, આર્યાભિવિનય, ગોકરુણાનિધિ, વ્યવહારભાનુ આદિ અનેક ગ્રન્થ લખ્યા. એ મહત્ત્વપૂર્ણ તથ્ય છે કે એમણે હિન્દીની મહત્તાને માટે ઈતિહાસમાં પહેલીવાર ધાર્મિક વિષયોને સંસ્કૃતના સ્થાને હિન્દી ભાષામાં લખ્યા જેનો પ્રભાવ એ પડ્યો કે સામાન્ય વ્યકિત પણ ધર્મના મર્મને જાણવામાં સમર્થ બની ગયો. ધર્મ પર પંડિતોનો એકાધિકાર સમાપ્ત થઈ ગયો. વૈદિક ધર્મના પ્રચાર-પ્રસાર માટે એમના કાર્યોમાં ૧૦ એપ્રિલ સન ૧૮૭૫ના દિવસે મુમ્બઈના કાકડવાડીમાં આર્યસમાજની સ્થાપના સહિત સત્યાર્થપ્રકાશ અને વેદ ભાષ્યનું પ્રણયન આદિ કાર્યો પ્રમુખ છે.

સ્વામીજી જ્યાં જ્યાં વેદપ્રચારાર્થે જતા હતા, એમના પ્રવચનોમાં આવતા લોકોમાંથી ઘણાં એમને પોતાનું જીવન વૃતાંત કહેવા નિવેદન કરતા હતા. એમણે ઑગસ્ટ ૧૮૭૫માં પૂનામાં આપેલા પ્રવચનોમાંથી એક પ્રવચનમાં પોતાના જીવન વૃતાન્ત વિષયે ચર્ચા કરી હતી. પછી થિયોસોફીકલ સોસાયટીના સંસ્થાપક કર્નલ અલ્કૉટની પ્રેરણા અને નિવેદન પર એમણે એપ્રિલ ૧૮૭૯માં પોતાનું સંક્ષિપ્ત જીવનવૃત્ત લખ્યું. આ જીવનવૃત્તના આરંભમાં લખ્યું છે કે ગૃહત્યાગના પહેલા દિવસથી જ મેં લોકોને મારા પિતાનું નામ અને કૂળનો પરિચય આપવાનો અસ્વીકાર કર્યો હતો. એનું મૂળ કારણ એજ છે કે મારું કર્તવ્ય મને આમ કરવાની આજ્ઞા નથી આપતું. જો મારા કોઈ સમ્બન્ધી મારા વૃત્તથી પરિચય મેળવી લેત તો ચોક્કસ મને શોધવાનો પ્રયત્ન કરતે. આમ પ્રચાર થાત તો મારે એમની સાથે ઘેર જવું પડત. પરિણામે ફરી એકવાર ગૃહસ્થામાં ડૂબવું પડત. માતા-પિતાની પણ ધર્મના ભાગરુપે સેવા-શુશ્રુષા કરવા પડત. આમ મોહમાં ફસાઈને સર્વ સુધાર માટેનો મારા આ યજ્ઞમાં વિક્ષેપ પડત. મારો જે યથાર્થ ઉદ્દેશ્ય છે, જેના માટે – સ્વજીવન-બલિદાન કરવાની સ્હેજે ચિંતા નથી, અને મારી આયુ (જીવન)ને કોઈ મૂલ્ય જાણ્યા સિવાય, જેના માટે મેં મારા જીવનનું સર્વસ્વ સ્વાહા કરી દેવું મારો કર્તવ્ય ધર્મ માન્યો, અર્થાત્ દેશ, જાતિ સમાજમાં સુધારા લાવી વૈદિક ધર્મનો પ્રચાર કરવો. આમ ન કરતે તો મારો દેશ પૂર્વવત્ અન્ધકારમાં સડ્યા કરત. અહીં મહર્ષિ દયાનન્દે પ્રસંગવશ પોતાના મૃત્યુના સાડા ચાર વર્ષ પહેલા પોતાના જીવનનો ઉદ્દેશ્ય બતાવવાની સાથે સાથે પોતાના મનની આંતરીક વાતો પણ પ્રકટ કરી છે જે અત્યન્ત મહત્ત્વપૂર્ણ છે અને એજ પ્રસ્તુત લેખનો પ્રધાન વિષય છે.

ઉપર્યુકત પંકિતઓમાં મહર્ષિ દયાનન્દ કહી રહ્યા છે કે એમણે સર્વ સુધારોના ઉત્તમ કામ માટે જ પોતાનું જીવન અર્પણ કર્યું છે – આજ એમનો ઉદ્દેશ્ય છે. આગળ સ્પષ્ટતા કરતા કહે છે સર્વ સુધારનું તાત્પર્ય દેશ સુધાર અને ધર્મનો પ્રચાર કહ્યા છે.

મહર્ષિ દયાનન્દના આ વાકયથી સમજાય છે કે એમના સમયમાં દેશમાં અનેક ક્ષેત્રોમાં અન્ધવિશ્વાસ, રુઢિવાદ અને પાખંડ આદિ અનેક વિકૃતિઓ વિદ્યમાન હતી, જેને કારણે દેશ કમજોર અને અવનત થઈ ગયો હતો. આમાં સુધારા

કરીને તેઓ દેશને સશકત બનાવવા ઇચ્છતા હતા. દેશના એક ઉત્કૃષ્ટ વેદવિદ્યાવાન બ્રહ્મચારી, અનેક શારીરિક અને બૌદ્ધિક ક્ષમતાઓથી યુકત ઋષિ તુલ્ય વ્યક્તિ દેશના સુધાર માટે કોઈ પ્રયોજન વિના પોતાનું સમ્પૂર્ણ જીવન વ્યતીત કરે છે, આ ઇતિહાસની એના પ્રકારની એક અપૂર્વ ઘટના છે. અહીં શ્રી રામચન્દ્રજીનું સ્મરણ થાય છે. એમણે પિતાના વચનની રક્ષા માટે વન જવાનું સ્વીકાર્યું હતું. ત્યાં પ્રયોજન પિતાના વચનની રક્ષાનું હતું, એમના વિવાહ થઈ ગયા હતા અને વનવાસની અવધિમાં પણ પરિવાર સાથેના સમ્બન્ધ જળવાયેલા હતા. શ્રી કૃષ્ણે મહાભારતના યુદ્ધમાં પ્રમુખ ભૂમિકા નિભાવી હતી. એનું કારણ પાંડવો સાથેના સંબંધ હતો. તેઓ વૈદિક વિદ્વાન, યોગી અને રાજનીતિજ્ઞ હતા અને સત્ય તેમજ ધર્મની રક્ષા માટે રાજા હોવા છતાં સારથી બનીને યુદ્ધમાં પ્રવૃત્ત થયા હતા. શ્રી કૃષ્ણે વિવાહ પણ કર્યા હતા અને પ્રદ્યુમ્ન નામના એક સંસ્કારિત સન્તાનને જન્મ પણ આપ્યો હતો.

પરંતુ સ્વામી દયાનન્દે દેશ, જાતિ અને ધર્મની રક્ષા માટે માતા-પિતા, ભાઈ-બહેન, ધન, સમ્બન્ધો, શારીરિક સુખો અને જીવન આદિ સર્વસ્વનો ત્યાગ કર્યો હતો. પોતાના મહાનતમ ઉદ્દેશ્યની પ્રાપ્તિ માટે તેઓ શ્રી રામચન્દ્ર અને શ્રી કૃષ્ણ સમાન જ યોગ્ય, સક્ષમ અને સમર્થ હતા. આ કાર્ય એમણે પ્રાણાર્પણથી કર્યું. એમાં મહદ્ અંશે સફળ રહ્યા. ઉદ્દેશ્યની સિદ્ધિ માટે જ માત્ર ૫૮ વર્ષ ૮ મહીનાના અલ્પ જીવનમાં પોતાના પ્રાણને પણ આહુત કરી દીધા. જે કાર્ય અમણે કર્યા છે તે ઇતિહાસમાં અભૂતપૂર્વ છે. સ્વામી દયાનન્દના કાર્યો તેમજ બલિદાનનું મહત્ત્વ એ કારણે પણ છે કે ભારતવાસી ધર્મના યથાર્થ સત્ય સ્વરુપને ભૂલી ગયા હતા. યજ્ઞનું સ્વરુપ વિકૃત થઈ ગયું હતું તો તેના સત્ય સ્વરુનું જ્ઞાન લોપ થી ગયું હતું. એજ કારણે બૌદ્ધમત અસ્તિત્વમાં આવ્યો અને સનાતન વૈદિક ધર્મનો પરાજય થયો.

દેશમાં બાળવિવાહ થતા હતા. વિવાહિત બાળક-બાલિકાઓના મૃત્યદર વધી રહ્યા હતા. નિસ્તેજ અને અલ્પજીવી સન્તાનો જન્મી રહ્યા હતા. વિધવાની દુર્દશા થઈ ગઈ હતી. સ્રિઓ અને દલિતોના ભણવા-ભણાવવાના અધિકાર છીનવાઈ ગયા હતા. વેદોના યથાર્થ વિદ્વાનો જોવા મળતા નહોતા.

બધા મનુષ્યોનો ધર્મ એક જ છે. એક ધર્મની અનેકાનેક અન્ધવિશ્વાસોથી યુકત શાખાઓ અને પ્રશાખાઓ ઉત્પન્ન થઈ ગઈ હતી. ભોળા લોકોનું ધર્મના નામે શોષણ થઈ રહ્યું હતું. બ્રાહ્મણ વર્ણના લોકોએ બધા પ્રકારના અધિકારો પર કબજો કરી લીધો હતો. તેઓ અન્યાય કરે તો પણ તેમના માટે દંડની કોઈ વ્યવસ્થા નહોતી. દેશને કૃત્રિમ રીતે જન્મના જાતિ-ઉપજાતિઓમાં વહેંચી દીધો હતો. પરિણામે દેશ નિર્બળ થઈ ગયો હતો. આ બધા સામાજિક દોષોને દૂર કરવાની સાથે સ્વામી દયાનન્દે વેદોના સત્ય સ્વરુપનો પ્રકાશ કર્યો. સ્રિઓ અને શૂદ્રને વેદાધ્યયનો અધિકાર આપ્યો, બધી સામાજિક વિષમતાઓ અને અન્યાય દૂર કર્યા અને ઈશ્વરના સત્ય સ્વરુપને રજુ કરીને સાચી ઉપાસના બતાવી, યજ્ઞોના વૈદિક સ્વરુપને પ્રસ્તુત કર્યું.

દેશ અને વિશ્વનો આટ-આટલો ઉપકાર કરવા છતાં પણ દેશના લોકોએ ઉપકારનો બદલો અપમાન, વિરોધ, અનેક વાર વિષ આપીને અને છેલ્લે બલિદાન શુદ્ધા લીધું. સમજાતું નથી કે આપણી જાતિને શું કહેવું જે પોતાના જ ત્રાતાના પ્રાણો પર ઘાત કરે છે. અહીં એ ઉક્તિ ચરિતાર્થ થાય છે કે તૂં ખાક ઉસે કરના ચાહે જો તેરા બેડા પાર કરે. સ્વામી દયાનન્દે પોતાના પ્રાણોની આહુતિ આપીને પોતાના વચનોને સત્યસિદ્ધ કર્યા, જેનો ઉલ્લેખ પોતાની આત્મકથામાં કર્યો હતો. અનુભવ થાય છે કે એમના ઉપકારોથી દેશ કયારેય ઉઋણ નહીં થઈ શકે.

પોતાના વચનોમાં સ્વામી દયાનન્દે એ પણ કહ્યું છે કે સર્વસુધારો માટે એમણે સ્વજીવન બલિદાન થઈ જાય એની સહેજે ચિન્તા નથી કરી, અને પોતાની આયુનું મૂલ્ય જાણ્યા વિના દેશ, જાતિ, ધર્મ માટે પોતાના સર્વસ્વને આહુત કરી દેવું એ જીવનનો સહુથી મોટો યજ્ઞ માન્યો. અર્થાત્ દેશનો સુધાર અને વૈદિક સંસ્કૃતિ અને ધર્મની સ્થાપના. અન્યથા દેશ પૂર્વવત અજ્ઞાનરુપી અન્ધકારમાં પડ્યો રહેત. મહર્ષિના આ વાકયો પણ એમના જીવન અને કાર્યો પર દૃષ્ટિ દોડાવવાથી સત્ય સિદ્ધ થાય છે

મહર્ષિ દયાનન્દના અનુયાયિઓને એ જોઈને દુઃખ થાય છે કે હજુ પણ દેશનો એક ભાગ સત્ય જાણવા માટે સજાગ નથી. સત્યનું ગ્રહણ તો દેશવાસિઓ ત્યારે જ કરી શકે જ્યારે એમને સત્ય ગુરુઓનું સાન્નિધ્ય અને માર્ગદર્શન પ્રાપ્ત થાય. એના માટે વૈદિક સાહિત્યના પ્રચાર-પ્રસારની આવશ્યકતા છે. અનાર્ષ ગ્રન્થોને ભણીને આ મત-મતાન્તરવાદિઓની બુદ્ધિ પણ અનાર્ષ દિશામાં દોડવા લાગી છે. મત-મતાન્તરોના અસત્ય વિચારોને વાંચવા અને સાંભળવા છતા પણ એમના મનમાં શંકાઓ નથી જાગતી? સત્ય-જ્ઞાન વેદ વિરુદ્ધ બધા મમત-મતાન્તર અનેક અસત્ય અને મિથ્યા વાતોનો પ્રચાર કરે છે અને એમના અનુયાયિઓ આંખો બંધ કરીને એને માની લે છે. એને કારણે ઈશ્વર અને ધર્મના વિષયમાં સર્વત્ર અન્ધકાર છવાયેલો છે. એટલે આપણે મહર્ષિ દયાનન્દના તપ અને પુરુષાર્થ સાર્થક થતા નથી દેખાતા. આજે પણ ચાલાક અને સ્વાર્થી લોકો ભોળા-અબૂધ ધર્મભીરુ લોકોનું શોષણ કરે છે. એમાંના કેટલાંકના તો અનૈતિક કાર્યો પણ સમાજની સામે ઉઘાડા પડતા રહે છે તેમ છતાં દેશની પ્રજાની ઊંઘ નથી ઉડતી. લોકોની આ મનોવૃત્તિ અને અકર્મણ્યતાએ સત્ય વૈદિક ધર્મના ભવિષ્ય પર પણ પ્રશ્નો ઊભા કર્યા છે.

મહર્ષિ દયાનન્દના તપ અને પુરુષાર્થના પૂર્ણ સફળ ન થવાથી દેશની દશા જેમની તેમ દેખાઈ રહી છે. એટલે વેદોના પ્રચાર - પ્રસારની આવશ્યકતા પહેલા કરતા પણ વધારે છે. મહર્ષિ દયાનન્દના એ વાકયો કે જેમાં એમણે પોતાની માન્યતાઓને જાહેર કરી છે અને એમ કરીને ધર્મ તેમજ દેશોન્નતિ માટે સર્વસ્વની આહુતિ આપી, નમન કરીએ છીએ. આજની પરિસ્થિતિઓમાં ધર્મ અને દેશ સુધાર માટે સત્યાર્થપ્રકાશના સ્વાધ્યાય, એને અનુરુપ આચરણ અને તદાનુસાર વૈદિક માન્યતાઓના પ્રચાર -પ્રસારમાં લાગી જવાની આવશ્યકતા છે. આશા છે કે દેશની પ્રબુદ્ધ જનતા મહર્ષિ દયાનન્દના વૈદિક સાહિત્યનો નિષ્પક્ષરીતે સ્વાધ્યાય કરીને ધર્મ અને સંસ્કૃતિની રક્ષા માટે તેમજ દેશોન્નતિ માટે પોતાના કર્તવ્યધર્મનુ પાલન કરશે.

મહર્ષિ દયાનન્દજીના ત્યાગ-તપસ્યા પર વિચાર કરવાથી એક જ પરિણામ સામે આવે છે કે દેશ-જાતિ-અને ધર્મ માટે

सर्वं वै पूर्णं स्वाहा

सर्वं वै पूर्णं स्वाहा

समाचार दर्पण

श्री मोहन भाई कुण्डारिया
केन्द्रीय राज्य कृषि मन्त्री

टंकारा ट्रस्ट की पुरानी मांग सरकार ने मानी
दिल्ली से राजकोट हवाई जहाज सेवा प्रारम्भ

ऋषि भक्तों को यह जानकर खुशी होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए निम्न एयर इण्डिया की सीधी फ्लाईट आरंभ हो गई है। दिल्ली से प्रतिदिन एयर इण्डिया फ्लाइट AI9631 प्रातः 5.50 बजे राजकोट के लिए प्रस्थान करती है। राजकोट से टंकारा मात्र 40 कि.मी. पर है इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए प्रतिदिन एयर इण्डिया फ्लाइट AI9632 प्रातः 8:25 बजे प्रस्थान करती है। टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते है। **टंकारा के स्थानीय सांसद एवम् केन्द्रीय राज्य कृषि मन्त्री भारत सरकार श्री मोहन भाई कुंडारिया के विशेष सहयोग एवम् प्रयासों द्वारा यह सम्भव हुआ। समस्त ऋषि भक्त एवम् टंकारा ट्रस्ट इसके लिए उनका आभार प्रकट करता है।**

वार्षिक अधिवेशन

शिवाजी नगर स्थित आर्य समाज के प्रांगण में सोमवार को **आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव** का वार्षिक अधिवेशन एवं डॉ. अशोक शर्मा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से चुनाव हुए। जिसमें मास्टर सोमनाथ को लगातार तीसरी बार व संख्या के अनुसार 6वीं बार आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का प्रधान चुना गया। नवनियुक्त प्रधान मास्टर सोमनाथ आर्य ने अपनी कार्यकारिणी का गठन करते हुए उपप्रधान नरेन्द्र देव कालरा, महामन्त्री प्रभूदयाल चुटानी, मन्त्री बलदेव कृष्ण गुगलानी, कोषाध्यक्ष नरवीर लाल चौधरी, भण्डाराध्यक्ष नरेन्द्र तनेजा, प्रेस सचिव पदमचंद आर्य, लेखा निरीक्षण सीआर कटारिया को जिम्मेवारी सौंपी।

वैदिक सत्संग सम्पन्न

पाणिनी महाविद्यालय रेवली के तत्वावधान में आयोजित वैदिक सत्संग समारोह में वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान का सागर है-वेद। ज्ञान के साधकों के लिए वेद प्रेरणा का स्रोत है। महाविद्यालय में रहने वाले ब्रह्मचारियों एवं सभी सत्संगप्रेमियों के लिए सूक्ति परम शैली में इस अवसर पर स्वामी विदेहयोगी जी, आचार्य श्रवण कुमार जी, आचार्य ओंकार जी, श्री सनत कपूर जी, श्री ज्योति अरोड़ा जी आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

रजत जयन्ती समारोह निमन्त्रण

गुरुकुल पूठ हापुड़ की रजत जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के तत्वावधान में दिनांक 06, 07 एवं 08 नवम्बर 2015 (तीन दिवसीय) प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन में किया गया है, जिसमें वैदिक विचारधारा के विद्वान साधु सन्यासियों के अलावा अनेक राजनेतागत पधारेंगे, जिसमें सभी आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि वे इस कार्यक्रम में भारी संख्या में पधार कर लाभान्वित है।

भजन सन्ध्या आयोजित

दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल मानसरोवर जयपुर के पांचवें वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में 56 सेक्टर के चित्रकूट मार्क में भजन सन्ध्या का आयोजन हुआ। आर्य जगत के श्रेष्ठ संगीतज्ञ, श्री नरेश निर्मल ने अपने सहयोगियों सहित माधुर्य का संचार किया। वेदों का प्रादुर्भाव, आध्यात्मिकता, समाज सुधार एवं राष्ट्रीय एकता लक्ष्य पर रहे। समारोह को सुशोभित करने वाले प्रबुद्धजनों में आचार्य, उषर्बुद्ध, डॉ. रामपाल विद्या भास्कर, आर्य समाज मान सरोवर के प्रधान, यशपाल यश, विदुषी श्रुतिशास्त्री सहित अनेक गणमान् अन्ततक भाव विभोर रहे। पौराणिक बहुल बस्ती में इस आयोजन का अनुकूल सन्देश गया।

वेद प्रचार सप्ताह आयोजित

आर्य समाज वाशी नई मुम्बई वेद प्रचार सप्ताह एवं हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया। वेद प्रचार में यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (अलीगढ़ उत्तर प्रदेश) उपस्थित थे। भजनोपदेशक कुमारी अंजली आर्या (करनाल हरियाणा) के मधुर भजनों ने सभी को मोह लिया। यज्ञ, प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम प्रातः एवं सायं आयोजित किया गया। दोनों विद्वानों ने ज्ञान की गंगा बहाया। हिन्दी दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत नवी मुम्बई के विद्यालयों के विद्यार्थियों की वाक्प्रतियोगिता दो वर्गो में अ वर्ग (कक्षा 9 व 10) एवं ब वर्ग (कक्षा 6 से 8) तीन चरणों में आयोजित की गई। प्रथम, द्वितीय व तृतीय के लिए चुनाव कर स्मृति चिन्ह व नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. (श्रीमती) बंदना प्रदीप को हिन्दी में की गई सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

नुआपड़ा जिला स्थित गुरुकुल हरिपुर, जुनानी में श्रावणी पर्व के अवसर पर गुरुकुल में नूतन प्रविष्ट 30 ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ संस्कार तथा पूजा की वास्तविकता एवं बोलबम की निरर्थकता से सम्बन्धित शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पर्यावरण प्रदूषण समस्या, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या एवं अनावृष्टि-अतिवृष्टि तथा असाध्य रोगों से आज का समाज बचे तथा विश्व शान्ति व राष्ट्र रक्षा निमित्त गुरुकुल द्वारा पन्द्रह दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया।

डी.ए.वी. समाचार

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर-15ए, चण्डीगढ़ में आर्य युवा समाज के तत्त्वावधान में ''मान सम्मान समारोह'' का आयोजन किया गया। ''यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'' इस वेदोक्त यूक्ति को चरितार्थ करते हुए पाचार्या जी ने यज्ञ में आहुति प्रदान करने हेतु सभी अतिथियों को आमंत्रित किया। मुख्य अतिथि श्रीमती स्नेहलता सामा, प्रधाना, स्त्री आर्य समाज, सैक्टर-16 डी, चण्डीगढ़ ने यज्ञीय दीपक प्रज्ज्वलित करके यज्ञ का शुभारंभ करवाया। विद्यालय के धर्माचार्य, आचार्य श्री रमेश कुमार शास्त्री, के ब्रह्मत्वमें ''यज्ञ कर्म'' का संचालन किया गया।

❑❑❑

छात्रों में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम व सम्मान को सुदृढ़ करने तथा भाषा में पारंगत होने की भावना विकसित करने हेतु **डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल द्वारका, दिल्ली** में 'हिन्दी भाषा उत्सव' का आयोजन किया गया। उत्सव का आरंभ वैदिक परम्परा के अनुसार यज्ञ से हुआ। उत्सव के प्रथम तीसरी कक्षा के छात्र-छात्राओं ने नाट्य मंचन प्रस्तुत किया। उत्सव की इस श्रृंखला में कविता वाचन, भाषण तथा वाद-विवाद को शामिल किया गया। उत्सव के समापन दिवस पर विद्यालय की प्रध ानाचार्य श्रीमती मोनिका मेहन जी ने छात्र-छात्राओं को हिन्दी भाषा के महत्व को समझाते हुए अपनी भाषा के प्रति गौरव व सम्मान की भावना रखने की प्रेरणा दी।

❑❑❑

डी.ए.वी. कॉलेज चीका हरियाणा में नये सत्र की शुरुआत यज्ञ के साथ की। प्रात: काल सर्वप्रथम ओ३म् नाम को दीर्घ ध्वनि के साथ उच्चारित कर सबने गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया। उसके बाद डी. ए.वी. सी.से. पब्लिक स्कूल चीका के आचार्य सत्यवीर शास्त्री ने विधि वत् यज्ञ की शुरुआत की। यज्ञ के मुख्य यजमान डी.ए.वी. कॉलेज चीका के प्राचार्य श्री रमेशलाल डाण्डा थे। यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज चीका के यशस्वी प्राचार्य जीने यज्ञ में सम्मिलत सभी प्राध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा-यह इस कॉलेज का 36वां सत्र है। डी.ए.वी. की शिक्षा ज्ञान-विज्ञान एवं संस्कारों के लिए पूरे देश विदेश में पहचानी जाती है। यह कॉलेज इस क्षेत्र में डी.ए.वी. शिक्षा का का मुख्य केन्द्र है।

❑❑❑

पटना प्रक्षेत्र के 15 डी.ए.वी. विद्यालयों में सामूहिक यज्ञ-हवन और वेद प्रचार के कार्यक्रम को धूमधाम के साथ मनाया गया। आर्य समाज मंदिर न्यू बेली रोड, दानापुर पटना में श्रावणी उपाकम के साथ वेदप्रचार सप्ताह शुरु हुआ। यज्ञ के वैज्ञानिक महत्व तथा ईश्वरीय ज्ञान वेदों की अपौरूषेयता की ओर विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को प्रेरित किया।

आर्य समाज मंदिर न्यू बेली रोड, दानापुर पटना के सभागार में श्री कृष्ण जन्माष्ठमी समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर गीताश्लोकोच्चारण प्रतियोगिता तथा वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें प्रक्षेत्र के 14 विद्यालयों के विद्यार्थियों ने प्रतिभागी के रूप में भाग लिया। इन्द्रजीत राय ने योगीराज श्री कृष्ण के जीवन को राष्ट्र भक्ति से ओत प्रोत, समर्पित और जनोपयोगी बताया। कार्यक्रम के अन्त में आगत अतिथियों, प्राचार्यो तथा शिक्षकों तथा आर्यो को स्मृति चिन्ह तथा आचार्य चमूपति की लिखित पुस्तक ''योगेश्वर श्री कृष्ण'' भेंट स्वरूप दी गई तथा प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं पुर स्कारों को पुरस्कृत किया गया।

डी.ए.वी. धर्मशाला के प्रागंण में श्रावण मास में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन एवं मन्त्रोच्चारण के साथ हुआ। यज्ञ का आरम्भ प्रधानाचार्य एस.एच. खान जी के कर-कमलों द्वारा हुआ। यज्ञ और वेद सप्ताह की संपूर्ण गतिविधि यों में आर्य युवा समाज डी.ए.वी. धर्मशाला के सदस्यों का मुख्य योगदान रहा। प्रतियोगिता, श्लोकान्ताक्षरी, श्लोकोच्चारण, संस्कृत-वार्तालाप, कविता-वाचन, वेद आधारित भजन गायक गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अध्यापकों ने भी वेदों को विषय में अपने विचार रखे। कार्यक्रम की समाप्ति पर पर प्रधानाचार्य महोदय ने कहा कि जितने भी आर्य पर्व हम मनाते हैं उन सभी का मनाना युवा-पीढ़ी में संस्कारों का संचार करना और सद्-विचारों का प्रसार करना है।

❑❑❑

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जसोला विहार, नई दिल्ली में 'हिन्दी सप्ताह' मनाया गया। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों ने कविता-वाचन, कहानी-वाचन, नृत्य तथा लघु-नाटिका के माध्यम से हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला। 'समापन समारोह' में माध्यामिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों ने हास्य-व्यंग्य तथा समसामयिक विषयों पर स्वरचित कविताओं का वाचन किया। 'बाल-श्रम रोको' नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा। इस अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल श्रेष्ठ विहार के वरिष्ठ हिन्दी अध्यापक डॉ. अरविन्द कुमार झा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने 'हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति और भविष्य में संभावनाएँ बताते हुए विस्तार भाषण दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. वी.के. बड़थ्वाल ने सभी विद्यार्थियों तथा हिन्दी विभाग को हिन्दी दिवस की बधाई देते हुए हिन्दी भाषा के विकास के लिए सदा प्रयत्नरत रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

❑❑❑

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़ के प्रांगण में आर्य समाज के तत्वावधान में विशेष वेदप्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री जी ने छात्रों को सम्बोधि त करते हुए कहा कि जो बालक माता-पिता गुरु आदि बड़ों का मान-सम्मान, सेवा सत्कार और उनकी आज्ञा का पालन करता है। वही दीर्घजीवी, विद्या, यश और बल से सम्पन्न बनता है। इससे पूर्व श्री कृष्णदेव आर्य जी, भजनोपदेशक (बरेली) ने अपने गीतों के माध्यम से छात्रों को प्रेरित किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रीना वशिष्ठ काचरू जी ने सभी विद्वानों एवं गणमान्य आर्य महानुभावों का धन्यवाद प्रकट किया। इस अवसर पर श्री जितेन्द्र आर्य कुलभूषण आर्य, श्री नन्दलाल कालड़ा, स्वामी जगत् मुनि, जयपाल शास्त्री, देवकीनन्दन शास्त्री, अमीचन्द शास्त्री, श्री सत्यदेव आर्य, श्री जगदीश विरमानी, श्री चन्द्रभान भूटानी, सुभाश आर्य, आदि अनेक आर्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

❑❑❑

यज्ञो वै श्रेष्ठ तमं कर्म ''ऋषिमुनि परम्परा की अनुगामिनी संस्था **डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी पब्लिक स्कूल खड़िया** में सत्र 2015-16 में धर्म से जुड़े रहने हेतु कक्षावर साप्ताहिक हवन कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया जिसमें कक्षा 12वीं से लेकर कक्षा तृतीय तक के छात्र-छात्राओं ने अलग-अलग दिनों में कक्षा अध्यापक/अध्यापिकाओं के साथ बैठकर हवन कार्यक्रम में भाग लिया। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों को मानसिक रूप से एकाग्रचित बनाना तथा वातावरण को पुष्टि प्रदान करना था जिससे शिक्षा-दीक्षा को उचित दशा एवं दिशा मिले।

श्रीमती माला सूद स्टेट टीचर अॅवार्ड से सम्मानित

अरविन्द गुप्ता डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, माडल टाउन, दिल्ली की प्रिन्सिपल श्रीमती माला सूद को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा स्टेट टीचर्स अॅवार्ड 2015 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान दिल्ली सरकार के मुख्यमन्त्री श्री अरविन्द केजरीवाल एवं उप-मुख्यमन्त्री श्री मनीश सिसौदिया के कर कमलों द्वारा दिया गया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज मानटाउन, सवाई माधोपुर, राजस्थान

प्रधान- डॉ. आर.पी. गुप्ता **मन्त्री**- श्री राम जी लाल आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री सोमेश चन्द्र माहेश्वरी

महिला आर्य समाज, मानटाउन, सवाई माधोपुर, राजस्थान

प्रधान- श्रीमती मनोहर देवी गुप्ता **मन्त्री**- श्रीमती ममता शर्मा

कोषाध्यक्ष- श्रीमती नीलम माहेश्वरी

आर्य समाज मठपारा, दुर्ग, छत्तीसगढ़

प्रधान- श्री विनोद बिहारी सक्सैना **मन्त्री**- श्री विनीत श्रीवास्तव

कोषाध्यक्ष- श्री सुजीत खरे

वैदिक सत्संग परिवार कल्याण समिति, कपूरथला, पंजाब

प्रधान- श्री नरेन्द्र कुमार सूद **मन्त्री**- श्री महेन्द्र पाल आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री अजय चढ्ढा

सांस्कृतिक प्रतियोगिता सम्पन्न

वैदिक सांस्कृति उत्थान न्यास सहारनपुर और आर्य समाज खेड़ा अफगान के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनि प्रतियोगिता में लगभग 25 विद्यालयों ने भाग लिया। महाराणा प्रताप उच्चतर माध्यामिक विद्यालय, आर्य कन्या इन्टर कॉलेज गंगोह, विजय सिंह पथिक हाइस्कूल ढकदेई, महन्त जगन्नाथ इन्टर कॉलेज बान्दुखेड़ी, महाराजा अग्रसैन कन्या विद्यालय नकुड़, श्री अजीत सिंह सरस्वती विद्या मन्दिर अम्बैहटा, रविन्द्र नाथ टैगोर (विद्यापीठ इन्टर कॉलेज नकुड़, आर्य कन्या जूनियर स्कूल, आर्य समाज खलासी लाइन में प्रतियोगिता के केन्द्र थे। लगभग सातसो विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

(पृष्ठ 3 का शेष)

ख्याल रहे, जिस मार्ग पर एक भी वाहन न हो उस सड़क पर अपनी गाड़ी स्वेच्छा से चलाई जा सकती है किन्तु मार्ग पर ट्रैफिक अधिक हो वहाँ सबका ख्याल रखकर गाड़ी चलानी पड़ती है। जैसे स्पीड ब्रेकर आ जाए तो स्पीड कम करनी पड़ती है, लाल सिग्नल आये तो गाड़ी खड़ी रखनी पड़ती है, हरा सिगनल दिखाई दे तो गाड़ी चलानी ही पड़ेगी। गाड़ी चाहे आपकी है किन्तु मार्ग सबका है। अत: रास्ते की हर प्रतिकूलता का ख्याल रखकर ही गाड़ी चलानी होगी क्योंकि अपनी और दूसरों की सलामती इसी में है।

ठीक इसी भाँति इन्सान भी अकेले नहीं अनेक लोगों के संग जी रहा है। अत: उसकी बात चाहे कितनी ही अच्छी व सच्ची क्यों न हो उसे दूसरों की अपेक्षा और अभिप्राय को भी महत्व देना होगा।

प्रकृति में गुलाब के इर्द-गिर्द काँटे हैं तो कमल का फूल कीचड़ में भी खिलता है। ऐसे ही संयुक्त परिवार का एक सदस्य अपने विचित्र स्वभाव के कारण आनन्दित माहौल को बिगाड़ देता है तो परिवार का एकाध व्यक्ति उदारमना भी है जो बेमेल हालातों में भी प्रसन्नता टिकाए रखता है।

खुशहाल परिवार वह नहीं है, जहाँ अधिक धन और आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हों बल्कि खुशियों से भरा परिवार वह है जहाँ प्रेम, उदारता, सहयोग और सहिष्णुता की खुशबू हो।

संयुक्त परिवार में दैनिक अथवा साप्ताहिक यज्ञ परिवार को जोड़ कर रखने में अत्यधिक सहयोगी बनता है। इसलिए जिस परिवार में निरन्तर यज्ञ होता है। वहां एक दूसरे के साथ ईर्षा, द्वेश आदि कदापि नहीं देखे जाते है।

अजय टंकारावाला

महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मानटाउन एवं महिला आर्य समाज सवाई माधोपुर (राजस्थान) के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्वेद शतकम महायज्ञ एवं वेदज्ञान की संगीतमय अमृतवर्षा का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें दैनिक यज्ञ व प्रवचन उपदेश भजन एवं सम्मान समारोह तथा वैदिक भजन संध्या का आयोजन किया गया। यज्ञ के आचार्य एवं वैदिक प्रवक्ता डॉ. कृष्णापाल सिंह जी जयपुर से पधारे। बरेली (उत्तर प्रदेश) से पधारे श्री विमलदेव अग्निहोत्री एवं करनाल (हरियाणा) से पधारी बहिन सुश्री अंजली आर्या ने अपने सुमधुर भजनों की सरिता से सभी श्रोताओं का मनमोह लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नवनिर्वाचित नगरसभापति (नगर परिषद्) डॉ. विमला शर्मा द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण करके किया गया। कार्यक्रम के दौरान ग्राम जड़ावता निवासी मुसलमान भाई श्री नुरूद्दीन का भी अभिनन्दन किया गया, जिनकी वेदों के स्वाध्याय एवं ईश्वरीय ज्ञान की तीव्र लगन होने के कारण वैदिक मन्त्रों का स्वयं आर्या करने में प्रयासरत है। इनके अतिरिक्त मध्यप्रदेश से आये श्री रामप्रताप आर्य का उनके द्वारा वेद प्रचार समिति को 5 बीघा जमीन लागभग 25-30 लाख की अनुमानित मूल्य की दान देने के लिए इस आर्यसमाज द्वारा सम्मानित किया गया।

सुभाषित

क्रोध एक ऐसा तेजाब है जो जिस चीज पे डाला जाता है उससे ज्यादा उस पात्र को नुकसान पहुँचाता है जिसमें वो रखा है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

पर्व-पुंज के उल्लेख में नरक-चतुर्दशी का उल्लेख किया गया है। प्राचीनकाल में घोर अत्याचारी नरकासुर ने इतना उत्पात मचाया हुआ था कि प्रजा त्राहि-त्राहि पुकार रही थी। प्रजा के त्राण के लिए सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण महाराज ने इसी चतुर्दशी को उसे नरक की यात्रा पर प्रस्थित किया था। अतः नरक चतुर्दशी का यह पर्व नरकासुर से त्राण का पर्व प्रसिद्ध हुआ। दीप-निर्वाण के प्रसंग में, अनुश्रुति के अनुसार महाभारत के अद्वितीय राजनेता, गीता-ज्ञान के अनन्य गायक, नरकासुर समेत शतशः राक्षसों से पीड़ित प्रजा के त्राण प्रदाता, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने दीपावली के दिन ही अपना पार्थिव दीप बुझा कर आत्मा का अशेष दीप प्रज्ज्वलित किया था। महात्मा बुद्ध के विषय में भी यह विश्वास प्रचलित है कि उनका निर्वाण दीपावली के दिन ही हुआ था। जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी को भी दीपावली के दिन ही निर्वाण प्राप्त हुआ था। क्रान्तदर्शी महर्षि दयानन्द ने भी दीपावली के दिन ही अपनी इह-लीला पूर्ण की थी। तीर्थराम से रामतीर्थ बने ओर कालान्तर में 'राम बादशाह' के नाम से प्रख्यात, स्वामी रामतीर्थ का स्वर्गारोहण भी दीपावली के दिन ही हुआ था।

मृत्यु और जीवन की संधि का यह समाहित प्रसंग भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का अनुपम प्रतीक है।

यह है हमारी दीपावली की सांस्कृतिक परम्परा, जिसमें पार्थिव दीप बुझे और हमने उनकी पावन स्मृतियों को अमरत्व प्रदान करने के लिए शताब्दों-सहस्त्राब्दों से मृत्तिका के दीप प्रज्ज्वलित किये। ज्योति का विसर्जन अन्धकार में नहीं प्रकाश में ही होना चाहिए, आनन्द का पर्यवसान आनन्द में ही होना चाहिए। यही भारतीय संस्कृति का चरमोत्सर्ग है।

प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रकाशपुंज बिखेरने वाला यह पर्व हमारे देश की उस महान् सांस्कृतिक परम्परा का प्रतीक है जिसके प्राणोद्रेक से हम प्रत्येक युग में मानव संस्कृति पर छाने वाले सघन अन्धकार को पराजित करके ज्ञान एवं सत्य की पुण्य ज्योति विकीर्ण करते आये हैं। असत्य की उपेक्षा कर सत्य को समेटने की पिपासा, मृत्यु को ठुकरा कर जीवन को अमरत्व देने की संधि और अन्धकार को पराभूत कर ज्योति की दीपशिखायें प्रज्ज्वलित करने का साहब सर्वप्रथम इस भारतभूमि पर, इस आर्यावर्त में ही जागृत हुआ, **प्राप्ति स्थानः उत्कर्ष कला केन्द्र (रजि.)**, दयानन्द धार्म महादेव, सुन्दर नगर, जिला-मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

विदुषामनुचर चैतन्यमुनि, महादेव

तहसील-सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

दूरभाषः01907-265353, चलभाषः 09418053092

अनुसरण अब विश्व भर में होने लगा है।

– 385, साईट-1, विकासपुरी, नई दिल्ली-18

सुभाषित

शिकायत करके समस्याओं से बचा नहीं जा सकता किन्तु जिम्मेदारी उठाकर समस्याओं को कम जरूर किया जा सकता है।

पुस्तक समीक्षा

वैदिक चार-धाम यात्रा

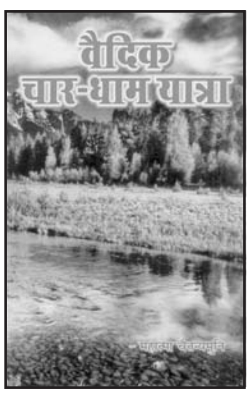

जब से वेद का पठन-पाठन छूटा, अनेक प्रकार के पाखण्ड फैलते चले गए। आज व्यक्ति उपासना, यज्ञ, व्रत, तीर्थ, श्राद्ध तथा गुरु एवं गुरुमन्त्र आदि के वास्तविक को पूर्णरूप से विस्मृत कर चुका है। चार-धाम मात्रा के सम्बन्ध में भी अनेक प्रकार की मान्यताएं स्थापित करके व्यक्ति जीवन को बर्बाद कर रहा है। जिनकी यात्रा करके व्यक्ति स्वयं को समस्त पापों से मुक्त होने की मिथ्या धारण बनाए हुए है। वास्तव में यदि पापों से मुक्त होना इतना ही आसान है तो यह तो किसी के लिए भी असंभव नहीं है।

ऋषि कहते है कि बिना भोगे व्यक्ति के कर्म कभी भी क्षीण नहीं होते है। स्वयं परमपिता परमेश्वर भी व्यक्ति के लिए किए हुए कर्मो को क्षमा नहीं कर सकता फिर किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा या किसी स्थान विशेष में जाकर किए हुए पाप कैसे क्षमा हो सकते है?

इस पुस्तक में वेद-शास्त्रों द्वारा अनुमोदित 'पुरुषार्थ-चतुष्टय' अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार-धामों का विवेचन करने का प्रयास किया है।

वैदिक तीर्थाटन

'तृ' धातु में 'थ' प्रत्यय जोड़ने पर तीर्थ शब्द की उत्पत्ति होती है तथा इसका शाब्दिक अर्थ होता है 'जिससे तरा जाए'। आजकल लोगों ने अनेक प्रकार के तथाकथित तीर्थों की कल्पनाएं कर रखी है जिससे वास्तविक तीर्थो से व्यक्ति बहुत दूर चला गया है। जिस प्रकार धर्म का सरलीकरण करके उसे केवल बाहरी चिन्हों तक ही सीमित कर दिया गया है वैसे ही अज्ञानता के कारण केवल कुछ स्थान विशेष पर जाने और कुछ नदियों एवं तालावों में स्नान करने को ही तीर्थ मान लिया गया है मगर यह सुनिनिश्चत् बात है कि जिस प्रकार मात्र बाहर के चिन्हों को धारण करने भर से ही व्यक्ति धाम्रिक नहीं हो जाता है, ठीक इसी प्रकार इन बाह्याण्डबरों से भी व्यक्ति का कल्याण नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जीवन को सार्थक, बनाने का सूत्र इस एक पंक्ति में ही दे दिया कि-'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'

इस पुस्तक में वास्तविक तीर्थो का विवेचन करने का प्रयास किया है जिनका कार्यन्वयन करने, जीवन के व्यवहार में लाने से पाठकों का निश्चित्‌रूप से कल्याण होगा।

प्राप्ति स्थानः उत्कर्ष कला केन्द्र (रजि.), दयानन्द धार्म महादेव, सुन्दर नगर, जिला-मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

विदुषामनुचर महात्मा चैतन्यमुनि

तहसील-सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हिमाचल प्रदेश) दूरभाषः01907-265353, चलभाषः 09418053092

(पृष्ठ 2 का शेष)

देखकर सभी अतिथि व जन सामान्य भाव विभोर हो गये तथा अपने अश्रु नही रोक पाये। जब महात्मा आनन्द स्वामी जन समूह के बीच से निकले तो व्यापक जन समूह ने पुष्प वर्षा से उनका स्वागत किया तथा महात्मा आनन्द स्वामी बने छात्र को गले लगा लिया। सहायता प्रकल्प के अन्तर्गत इस आयोजन के अन्त में जरूरतमंदों को सिलाई मशीने व ट्राई साइकिले भी वितरित किये गए।

आर्य समाज कोटा के सहयोग से वृहद स्तर पर वृक्षारोपण भी किया गया। माननीय प्रधान श्रीमान पूनम सूरी जी आर्य समाज कोटा के सहयोग से विद्यालय परिसर में औषधीय पौधा गूगल लगाकर वृक्षारोपण अभियान की प्रेरणा दी और कहा कि पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ के साथ हमें वृक्षारोंपण कार्यक्रम को भी प्रमुखता से अपनाना चाहिये।

कार्यक्रम के अन्त में प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि आयोजन बेहद सफल रहा। कार्यक्रम की सफलता ने डीएवी पब्लिक स्कूल कोटा की सफल परम्परा में एक ओर कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। कार्यक्रम में ''स्मारिका'' का विमोचन भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

यज्ञ करते डॉ. पूनम सूरी एवम् श्रीमती मणि सूरी जी, डॉ. एस.के. शर्मा एवम् डा. वी. सिंह

डी.ए.वी. कोटा के विद्यार्थी एवम् पाणिनी गुरुकुल कन्या महाविद्यालय बनारस की ब्रह्मचारिणियां

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

A Relationship With God is the most important relationship You can have.

....

Trust in Him & Evertything will always turn out Fine.....

टंकारा समाचार नवम्बर 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-11-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.10.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइलः 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय